विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 3

विधिवत प्रक्रियाओं में तर्क-वाक्य

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
दिशा-निर्धारण 1
परिभाषा 1
निर्देशात्मक 2
तथ्यात्मक 3
धर्मविज्ञान-संबंधी 4
प्रत्यक्ष 5
वैधता 6
दिव्य अबोधता 6
आधुनिक विज्ञान-संबंधी तर्कवाद 7
स्थान 8
रचना 9
दर्शनशास्त्रीय सहभागिताएँ 10
पवित्रशास्त्र की व्याख्या 10
चुनौतियाँ 11
तथ्यात्मक कटौती 12
तथ्यात्मक मिलान 16
मूल्य और खतरे 18
मसीही जीवन 19
वृद्धि 19
रूकावट 20
समुदाय में सहभागिता 21
वृद्धि 21
रूकावट 22
पवित्रशास्त्र की व्याख्या 23
वृद्धि 23
रूकावट 24
उपसंहार 26

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय तीन

विधिवत प्रक्रियाओं में तर्क-वाक्य

परिचय

पूरे संसार में न्यायालयों में अधिवक्ता एक न्यायाधीश या न्यायपीठ को अपने दृष्टिकोण के द्वारा आश्वस्त करने का प्रयास करते हैं। उनके तर्कों के लिए यह सदैव महत्वपूर्ण होता है कि प्रत्येक व्यक्ति मुकदमें के मूलभूत तथ्यों को समझ ले। इसलिए अक्सर मुकद्दमे की सुनवाई के अंत में अधिवक्ता तथ्यों को तर्क-वाक्यों की एक श्रृंखला में पूरी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करते हैं। “सच्चाई यह है।” “सच्चाई वह है।” “हुआ यह था।” “हुआ वह था।”

कई रूपों में, विधिवत धर्मविज्ञान में भी कुछ ऐसा ही होता है। विधिवत धर्मविज्ञानियों को भी निश्चित तथ्यों, निश्चित धर्मवैज्ञानिक तथ्यों को स्थापित करना होता है। अतः वे अपने विषयों को प्रत्यक्ष धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों में प्रस्तुत करते हैं।

यह विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना की हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है और हमने इस अध्याय का शीर्षक “विधिवत प्रक्रियाओं में तर्क-वाक्य” दिया है। पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानी ठोस मसीही धर्मविज्ञान की खोज करने, उसकी व्याख्या करने और उसका बचाव करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। और जैसा कि हम इस अध्याय में देखेंगे, उनकी प्रतिबद्धता का एक मूलभूत भाग धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों में मसीही धारणाओं को व्यक्त करना है।

हमारा यह अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम विधिवत प्रक्रियाओं में तर्क-वाक्यों के प्रति एक सामान्य दिशा-निर्धारण को प्राप्त करेंगे। वे कौन से हैं? और वे किस प्रकार विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया के भीतर उपयुक्त बैठते हैं। दूसरा, हम यह खोज करेंगे कि किस प्रकार तर्क-वाक्य विधिवत धर्मविज्ञान में रचे जाते हैं। और तीसरा, हम तर्क-वाक्यों पर इस प्रकार ध्यान दिए जाने के कुछ मूल्यों और खतरों की जाँच करेंगे। आइए हम कुछ आरंभिक विचारों पर ध्यान केंद्रित करते हुए आरंभ करें, अर्थात् विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण के इस पहलू की ओर एक सामान्य दिशा-निर्धारण के साथ आरंभ करें।

दिशा-निर्धारण

विधिवत प्रक्रियाओं में तर्क-वाक्यों के प्रति हमारा दिशा-निर्धारण करना तीन विषयों को स्पर्श करेगा। पहला, हम तर्क-वाक्यों की एक सामान्य परिभाषा प्रदान करेंगे। दूसरा, हम उनकी वैधता पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और तीसरा, हम धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के स्थान का विवरण देंगे। विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की पूरी प्रक्रिया में उनकी क्या भूमिका है? आइए सबसे पहले हम धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की परिभाषा पर ध्यान दें।

परिभाषा

मैं सोचता हूँ कि हममें से बहुत लोगों को यह लगता है कि धर्मविज्ञान को विभिन्न रूपों में व्यक्त किया जा सकता है। जब हम प्रार्थना करते हैं, भजन गाते हैं, सुसमाचार प्रचार करते हैं, अपने बच्चों को बाइबल की कहानियाँ सुनाते हैं, या हमारे विश्वास की चर्चा अपने मित्रों के साथ करते हैं, तो हम मसीही

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

धर्मविज्ञान को व्यक्त करते हैं। परंतु विधिवत धर्मविज्ञान के संकाय में एक ऐसा मुख्य तरीका है जिसमें धर्मविज्ञान को मौखिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है, और वह है धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के रूप में। हमारे उद्देश्यों के लिए हम धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की परिभाषा इस रूप में देंगे :

धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य एक ऐसा निर्देशात्मक वाक्य है जो जितना हो सके उतने प्रत्यक्ष रूप से कम से कम एक तथ्यात्मक धर्मवैज्ञानिक दावे को स्थापित करता है।

इससे पहले कि हम इस परिभाषा के विवरणों को देखें, आइए हमने जो कहा है उसके अर्थ के कुछ उदाहरणों को देखें।

विलियम शेड ने अपनी पुस्तक डोगमैटिक थियोलोजी के दूसरे अंक के अध्याय 2 के खंड 2 में मसीह की दोहरी आज्ञाकारिता के बारे में इन निम्न कथनों को लिखा है :

> मसीह की सक्रिय और निष्क्रिय आज्ञाकारिता के बीच एक अंतर बनाया गया है। निष्क्रिय आज्ञाकारिता मसीह के प्रत्येक तरह के दुखों को दर्शाता है...मसीह की सक्रिय आज्ञाकारिता नैतिक व्यवस्था का उसका पूर्ण प्रदर्शन है।

यहाँ हम देखते हैं कि शेड ने तीन मूलभूत दावे किए। पहला, उसने एक सामान्य कथन को कहा कि मसीह की आज्ञाकारिता का वर्णन दो श्रेणियों में किया जा सकता है : सक्रिय और निष्क्रिय। दूसरा यह है कि मसीह की निष्क्रिय आज्ञाकारिता उसके दुखों को सहना थी। और तीसरा यह है कि मसीह की सक्रिय आज्ञाकारिता उसके द्वारा परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था को बिना किसी दोष के पूरा करना थी।

अब, हमारे पिछले अध्यायों को याद करते हुए हम देख सकते हैं कि शेड ने दो तकनीकी धर्मवैज्ञानिक शब्दों पर ध्यान केंद्रित किया : “निष्क्रिय आज्ञाकारिता” और “सक्रिय आज्ञाकारिता।” परंतु इस अध्याय में हमारी अधिक रूचि उस तरीके में होगी जिसमें शेड जैसे धर्मविज्ञानी तकनीकी शब्दों को धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों से जोड़ते हैं। इस विषय की खोज करने के लिए, आइए एक बार फिर हम अपनी परिभाषा को देखें :

> धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य एक ऐसा निर्देशात्मक वाक्य है जो जितना हो सके उतने प्रत्यक्ष रूप से कम से कम एक तथ्यात्मक धर्मवैज्ञानिक दावे को स्थापित करता है।

यह परिभाषा विधिवत धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों की चार विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करती है। पहला, ये “निर्देशात्मक वाक्य” हैं। दूसरा, ये तथ्यात्मक दावे हैं। तीसरा, ये तथ्यात्मक दावे अपनी प्रकृति में मूलभूत रूप से धर्मवैज्ञानिक हैं। और चौथा, ये प्रत्यक्ष तथ्यात्मक धर्मवैज्ञानिक दावे करते हैं, या जैसे हम कहते हैं, वे विषयों को “जितना हो सके उतने प्रत्यक्ष रूप से” कहते हैं।

आइए इस विचार के साथ आरंभ करते हुए कि धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य निर्देशात्मक कथन होते हैं, इस परिभाषा के प्रत्येक पहलू को निकटता से देखें।

निर्देशात्मक

अब हम सब जानते हैं कि सामान्य मानवीय भाषा में विभिन्न प्रकार के वाक्य होते हैं। उदाहरण के लिए, यह वाक्य “मेरी चाबी कहाँ है?” एक प्रश्नवाचक वाक्य है। “दरवाजा खोलो” एक आज्ञासूचक वाक्य है क्योंकि यह एक आदेश या निमत्रंण देता है। इनमें से कोई भी वाक्य एक तर्क-वाक्य की योग्यता नहीं रखता। परंतु यह वाक्य, “मेरी चाबी दरवाजे को खोल देगी” एक निर्देशात्मक वाक्य है जो दर्शाता है कि चाबी क्या करेगी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमें स्पष्ट होना चाहिए कि जब विधिवत धर्मविज्ञानी अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, तो वे सब प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं, परंतु इसके साथ-साथ, विधिवत धर्मविज्ञान में अभिव्यक्ति की प्रभावी विधि सीधे सीधे निर्देशात्मक कथन है। अभिव्यक्ति की यह विधि इतनी ज्यादा प्रभावी है कि किसी और तरीके से पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान को लिखना असंभव है।

यह समझने के अतिरिक्त कि तर्क-वाक्य निर्देशात्मक वाक्यों के रूप में होते हैं, यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि उनकी रचना तथ्यात्मक दावों की घोषणा करने के लिए की गई है।

तथ्यात्मक

तर्क-वाक्य तथ्यों को पहचानते और उनका वर्णन करते हैं। अब सदियों से दार्शनिकों, धर्मवैज्ञानिकों और भाषाविज्ञानियों ने यह ध्यान दिया है कि विभिन्न तरह के तर्क-वाक्य विभिन्न तरह के तथ्यात्मक दावे करते हैं। ये विषय इतने जटिल हैं कि हम व्यापक रूप से उनके बारे में चर्चा नहीं कर सकते, परंतु विषयों को कुछ ज्यादा ही सरल करने के जोखिम के साथ हम तर्क-वाक्यों के दो पहलुओं पर ध्यान देंगे जिनको हमें विधिवत धर्मविज्ञान की खोज करते समय अपने ध्यान में रखना चाहिए।

तर्क पर आधारित अरस्तू के लेखनों में स्थापित रूपरेखाओं का अनुसरण करते हुए हम यह दर्शाएंगे कि तर्क-वाक्यों को सबसे पहले मात्रा के अनुसार और फिर दूसरा उनकी गुणवत्ता के अनुसार अलग-अलग किया जा सकता है।

पहला, तर्क-वाक्यों का वर्णन उनके विषय की मात्रा के अनुसार किया जा सकता है। एक सार्वभौमिक तर्क-वाक्य के विषय में बिना किसी अपवाद के समूह का प्रत्येक सदस्य सम्मिलित होता है। उदाहरण के लिए, यह वाक्य “सभी स्तनधारियों के बाल होते हैं,” दावा करता है कि सभी स्तनधारियों के साथ कुछ बातें समान होती हैं।

लगभग इसी तरह विधिवत धर्मविज्ञानी धर्मविज्ञान में अक्सर सार्वभौमिक दावे करते हैं। मसीही धर्मविज्ञानियों के लिए इस तरह की बातें कहना सामान्य बात है, “सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप हैं” या “सभी उत्तम दान परमेश्वर की ओर से आते हैं।”

दूसरी ओर, अन्य तर्क-वाक्य “विशेष” होते हैं क्योंकि उनके विषयों में किसी बड़े समूह के कुछ सदस्य ही सम्मिलित होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि मैं यह कहूँ, “यह मकान मेरा मकान है।” तो मैं एक ऐसा तथ्यात्मक दावा कर रहा हूँ जो विशेष या सटीक है, न कि सार्वभौमिक। मैं सब मकानों के लिए कोई बात नहीं कह रहा हूँ, केवल मेरे अपने मकान के बारे में।

विधिवत धर्मविज्ञानी अक्सर विशेष तथ्यात्मक दावे भी करते हैं। उदाहरण के लिए, वे कुछ इस तरह से कह सकते हैं, “कलीसिया के कुछ सदस्य अविश्वासी हैं,” या वे यह दावा कर सकते हैं, “पौलुस एक प्रेरित था।”

अब अधिकतर, विधिवत धर्मविज्ञानी जितनी संभव हो सके उतनी सटीकता से मात्राओं का वर्णन करने का प्रयास करते हैं — कभी-कभी तो बाइबल में पाए जाने वाले किसी पद से भी सटीक होने का। परंतु समय-समय पर वे अपवादों का उल्लेख न करने के द्वारा विषयों का सामान्यीकरण करके उन्हें संक्षिप्त कर देते हैं। उदाहरण के लिए, एक विधिवत धर्मविज्ञानी के लिए यह कहना एक सामान्य बात होगी, “सभी मनुष्य पापी हैं।” और पहली दृष्टि में, यह सार्वभौमिक तर्क-वाक्य सत्य प्रतीत होता है। परंतु यह कथन उतना सटीक नहीं है जितना होना चाहिए। वास्तव में, संपूर्ण पवित्रशास्त्र यह सिखाता है कि यीशु एक मनुष्य था, परंतु यह भी कि वह धर्मी था। इसलिए समय-समय पर हमें रूकना और यह पूछना जरुरी है कि किसी समय पर विधिवत धर्मविज्ञानी वास्तव में किसी पूरे विषय के बारे में दावा कर रहे हैं या उस विषय की श्रेणियों के बारे में जिसका वे वर्णन करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दूसरा, मात्रा के अतिरिक्त, तर्क-वाक्यों को उनके गुण के द्वारा भी अलग किया जा सकता है। अर्थात्, उन्हें या तो स्वीकारात्मक या नकारात्मक कथनों में बांटा जा सकता है। एक ओर तो, स्वीकारात्मक तर्क-वाक्य सकारात्मक रूप से कहते हैं कि कोई बात सत्य है। प्रतिदिन के वार्तालाप में हम कुछ ऐसी बात कह सकते हैं जैसे, "यह कुत्ता मेरा है।" यह विशेष और स्वीकारात्मक कथन है। यह पुष्टि करता है कि बहुत चीजों में से एक यह कुत्ता मुझ से संबंधित है। विधिवत धर्मविज्ञान में एक इस तरह का तर्क-वाक्य जैसे, "बाइबल के कुछ संदर्भ पवित्रीकरण के बारे में शिक्षा देते हैं" भी एक विशेष स्वीकारात्मक तर्क-वाक्य है, क्योंकि यह कहता है कि कम से कम बाइबल के कुछ लेख इस श्रेणी में आते हैं।

सामान्य जीवन में एक सार्वभौमिक और स्वीकारात्मक कथन में कुछ ऐसा सम्मिलित होगा जैसे : "वह सब कुछ जो मैंने खो दिया मेरे लिए महत्वपूर्ण है।" क्योंकि यह सकारात्मक कथन है कि वह सब कुछ जो मैंने खोया वह कम से कम उसका एक भाग है जो मेरे लिए महत्वपूर्ण है। विधिवत धर्मविज्ञानी अक्सर अपने अध्ययन के क्षेत्र में ऐसे ही कथन कहते हैं। उदाहरण के लिए इस कथन पर ध्यान दें, "प्रत्येक वस्तु जो रची गई वह परमेश्वर के द्वारा रची गई।" यह तर्क-वाक्य पुष्टि करता है कि वह सब कुछ जिसे रचा गया वह उन वस्तुओं के समूह में हैं जिन्हें परमेश्वर ने रचा है।

दूसरी ओर तर्क-वाक्यों के नकारात्मक गुण भी हो सकते हैं और वे या तो सार्वभौमिक या विशेष भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब मैं यह कहता हूँ, "यह मकान मेरा नहीं है।" तो मैं एक विशेष और नकारात्मक तर्क-वाक्य को कहता हूँ। और यदि मैं एक सार्वभौमिक और नकारात्मक तर्क-वाक्य को कहना चाहता हूँ, तो मैं कुछ इस तरीके से कह सकता हूँ, "इस कमरे में कोई भी अंग्रेजी नहीं बोलता।" विधिवत धर्मविज्ञान में नकारात्मक दावे भी प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिए, "यीशु एक पापी नहीं था," एक नकारात्मक और विशेष तर्क-वाक्य है। यह एक व्यक्ति, यीशु के बारे में किसी बात का इनकार करता है। और हम धर्मविज्ञान में सार्वभौमिक नकारात्मकताओं को भी पाते हैं, जैसे कि ऐसा कथन, "कोई भी जो एक अविश्वासी रहता है वह बचाया नहीं जा सकता।" कोई भी निरंतर रूप से अविश्वासी रहने वाला उनमें शामिल नहीं होता जो उद्धार को प्राप्त करेंगे।

जब हम विधिवत धर्मविज्ञान का अध्ययन करते हैं तो मात्रा और गुण में इन भिन्नताओं को ध्यान में रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है। उनको मिला देने से उसके विषय में बहुत सी गलतफहमियाँ हो सकती हैं जिसका दावा धर्मविज्ञानी करते हैं।

अब हमें अपनी परिभाषा के तीसरे पहलू की ओर मुड़ना चाहिए : धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य धर्मवैज्ञानिक दावे करते हैं।

धर्मविज्ञान-संबंधी

जैसा कि हमने अपनी परिभाषा में लिखा है, धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य न केवल तथ्यात्मक दावे करते हैं बल्कि वे तथ्यात्मक धर्मवैज्ञानिक दावे करते हैं। अब यह सत्य है कि विधिवत धर्मविज्ञानी इतिहास के उन तथ्यों और दर्शनशास्त्रीय अवधारणाओं को दर्शाते हैं जो धर्मविज्ञान के तानेबाने में अच्छी तरह से नहीं आते। परंतु उनका मुख्य विषय धर्मविज्ञान है।

अब यह समझने के लिए कि "धर्मवैज्ञानिक तथ्यों" से हमारा क्या अर्थ है, हमें याद रखना चाहिए कि धर्मविज्ञान अपेक्षाकृत एक व्यापक विषय है। आपको याद होगा कि थॉमस अक्विनॉस ने धर्मविज्ञान की परिभाषा को दो मुख्य बातों पर आधारित किया है। सुम्मा थियोलोजिका की पहली पुस्तक के अध्याय 1 के खंड 7 में, अक्विनॉस ने अपने धर्मविज्ञान को "पवित्र धर्मशिक्षा" कहा है और इस तरह से परिभाषित किया है :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> एक ऐसा एकीकृत विज्ञान जिसमें सभी वस्तुओं के साथ परमेश्वर के पहलू के अधीन व्यवहार किया जाता है क्योंकि वे या तो स्वयं परमेश्वर हैं या वे परमेश्वर को दर्शाती हैं।

अक्विनॉस के शब्द विधिवत धर्मविज्ञान में एक सामान्य भिन्नता को दर्शाते हैं, अर्थात् ईश-विज्ञान, जो कि स्वयं परमेश्वर का अध्ययन है, और सामान्य धर्मविज्ञान, जो परमेश्वर से संबंधित अन्य विषयों का अध्ययन है, के बीच भिन्नता।

इस सामान्य भिन्नता के विचार के साथ विधिवत प्रक्रियाएं अपना ध्यान धर्मविज्ञान के इन दोनों स्तरों पर केंद्रित करती हैं। एक ओर तो विधिवत धर्मविज्ञानी अपना ध्यान ईश-विज्ञान पर ऐसे कथनों को कहते हुए केंद्रित करते हैं, जिनका संबंध सीधे परमेश्वर से है। वे ऐसी बातें कहते हैं जैसे : "परमेश्वर पवित्र है" या "परमेश्वर ने संसार की रचना की है।"

परंतु दूसरी ओर एक व्यापक अर्थ में, विधिवत धर्मविज्ञानी स्वयं को सामान्य धर्मविज्ञान के साथ भी जोड़ते हैं और परमेश्वर से संबंधित सृष्टि के पहलुओं के बारे में दावे करते हैं। उद्धार के विषय में, वे अक्सर ऐसी बातें कहते हैं जैसे, "उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा है," या मनुष्य की परिस्थितियों के विषय में, वे अक्सर ऐसी बातें कहते हैं जैसे, "आज के समय में रह रहे सब लोग पापी हैं।" इस भाव में, धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य स्वयं परमेश्वर की अपेक्षा अधिक विषयों को संबोधित करते हैं, परंतु सदैव, चाहे अप्रत्यक्ष रूप से ही, परमेश्वर के साथ उनके संबंध के संदर्भ में।

चौथा, इस बात पर ध्यान देना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि विधिवत धर्मविज्ञानी अपने दृष्टिकोणों को स्वयं पूरी तरह से प्रत्यक्ष और स्पष्ट होने के साथ व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

प्रत्यक्ष

निसंदेह हम सब यह अनुभव करते हैं कि न तो किसी बात का कोई भी विवरण, और न ही परमेश्वर का कोई विवरण पूरी तरह से सिद्ध है। परंतु इसके साथ-साथ, विधिवत धर्मविज्ञानी जब धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना करते हैं तो जितना हो सके उतना प्रत्यक्ष रहने का प्रयास करते हैं।

एक विधिवत धर्मविज्ञानी के लिए केवल यह कहना बहुत असामान्य होगा : "यहोवा एक चरवाहा है," और फिर इसे वहाँ छोड़ देना। यह कथन पवित्रशास्त्र के अनुसार सत्य है, परंतु विधिवत धर्मविज्ञानी बातों को अप्रत्यक्ष रूपों जैसे रूपकों और अन्य अलंकारों में कहने के तरीकों से बचने का प्रयास करते हैं। इसलिए यह कहने की अपेक्षा "यहोवा एक चरवाहा है," विधिवत धर्मविज्ञानी विषय को प्रत्यक्ष रूप से कुछ इस तरह से कहने का प्रयास करते हैं जैसे, "परमेश्वर अपने लोगों के लिए विशेष रूप से प्रबंध करता है।" वे स्वयं को जितना हो सके उतना स्पष्ट, सीधे शब्दों में, सामान्य, तर्क-वाक्यों के रूप में व्यक्त करना चाहते हैं।

सारांश में, हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हम एक विशेष तरह की अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो विधिवत धर्मविज्ञान में प्रभावशाली है। हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम धर्मवैज्ञानिक अभिव्यक्तियों को निर्देशात्मक वाक्यों के रूप में सोच सकते हैं जो जितना संभव हो उतने प्रत्यक्ष रूप में कम से कम एक तथ्यात्मक धर्मवैज्ञानिक दावा करते हैं।

हमारी मूलभूत परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, हमें इस विषय की ओर हमारे सामान्य दिशा-निर्धारण के दूसरे पहलू की ओर मुड़ना चाहिए : तर्क-वाक्यों के साथ धर्मविज्ञान के निर्माण का क्या आधार है? इस प्रक्रिया को कौन सी बात वैध बनाती है?

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वैधता

कलीसिया के संपूर्ण इतिहास में, मसीहियों ने अक्सर अपने विश्वास को सीधे सीधे कथनों के रूप में व्यक्त किया है। उदाहरण के लिए चौथी-शताब्दी के नीसीया के विश्वासवचन के आरंभिक वचनों को सुनें :

> मैं विश्वास करता हूँ एकमात्र, सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर जिसने आकाश, पृथ्वी और सब कुछ जो उसमें सदृश्य और अदृश्य है, की सृष्टि की।

नीसीया का विश्वासवचन अन्य अति महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की सूची भी देता है। इसको और कई अन्य समान विश्वासवचनों को सदियों से मसीहियों द्वारा समर्थन मिला है।

इसके साथ-साथ, इतिहास में ऐसे भी लोग हुए हैं, जिन्होंने धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के प्रयोग की वैधता पर सवाल उठाए हैं। हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, हम दो मुख्य आपत्तियों का उल्लेख करेंगे : एक ओर, वे चुनौतियाँ हैं जो दिव्य अबोधता की धर्मशिक्षा से उठ खड़ी होती हैं; और दूसरी ओर आधुनिक विज्ञान-संबंधी तर्कवाद की चुनौतियाँ हैं। सबसे पहले इस बात पर ध्यान दें कि कैसे दिव्य अबोधता की धर्मशिक्षा ने सवाल उठाए हैं।

दिव्य अबोधता

हम सब यशायाह 55:8-9 के जाने-माने शब्दों से परिचित हैं, जो इस धर्मशिक्षा का आधार है।

> क्योंकि यहोवा कहता है कि, "मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अंतर है" (यशायाह 55:8-9)।

दुर्भाग्य से, बहुत से क्षेत्रों में इस और ऐसे ही अन्य अनुच्छेदों का प्रयोग इस विचार के समर्थन के लिए किया जाता रहा है कि परमेश्वर मानसिक क्षमताओं से इतना ज्यादा परे है कि हम उसका वर्णन ही नहीं कर सकते।

इस दृष्टिकोण में, यह कहना कि परमेश्वर प्रेम है कुछ ऐसी बात को कहने का प्रयास करना है जिसका वास्तव में वर्णन नहीं किया जा सकता। यह कहना कि यीशु ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है परमेश्वर को बिना किसी आधार के सीमित करना होगा।

अब इस तरह की सोच ने संपूर्ण इतिहास में कई तरह के रूपों को लिया है। उदाहरण के लिए, बहुत से धर्मविज्ञानियों ने यह तर्क दिया है कि परमेश्वर के बारे में कुछ भी कहने का केवल एक ही मार्ग है – नकारने के मार्ग। इस दृष्टिकोण में, हम परमेश्वर के बारे में कोई सकारात्मक कथन नहीं कह सकते। हम सृष्टि के साथ उसकी तुलना करने के द्वारा केवल उसके बारे में बातों का इनकार कर सकते हैं। हम केवल ऐसी बातें कह सकते हैं, "परमेश्वर स्थान के आधार पर सीमित नहीं है।" "परमेश्वर समय के बंधन में नहीं है।" "परमेश्वर भौतिक नहीं है।" अभी तक के पूरे इतिहास में कई भिन्न प्रकार के संदेही, अज्ञेयवादी धर्मविज्ञानियों ने यह तर्क दिया है कि हम परमेश्वर या उससे संबंधित बातों का सकारात्मक रूप से वर्णन करने में सक्षम नहीं हैं।

इन भ्रामक दृष्टिकोणों के विपरीत, मसीह के अनुयायियों के रूप में हमें पवित्रशास्त्र की साक्षी के द्वारा धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की वैधता का मूल्यांकन करना चाहिए। पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानी इस तथ्य के साथ कि परमेश्वर को तब जाना जा सकता है जब वह स्वयं को प्रकट करता है, परमेश्वर की अबोधता के बारे में बोलने के द्वारा पवित्रशास्त्र का अनुसरण करते हैं। एक ओर, हम परमेश्वर को पूरी

तरह से नहीं जान सकते, परंतु दूसरी ओर, हम उसे आंशिक रूप से जान सकते हैं जब वह स्वयं को हम पर प्रकट करता है। और परमेश्वर के विषय में यह आंशिक ज्ञान फिर भी सच्चा ज्ञान है। पवित्रशास्त्र का एक अनुच्छेद इस अंतर को स्पष्ट कर देता है : व्यवस्थाविवरण 29:29। इस पद में मूसा ने इस विषय को इस्राएल के लिए इस प्रकार सारगर्भित किया है :

> **गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परंतु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिए हमारे और हमारे वंश के वश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ (व्यवस्थाविवरण 29:29)।**

ध्यान दें, यहाँ पर बातों की दो श्रेणियाँ सामने हैं। एक ओर, मूसा ने "गुप्त बातों" के बारे में कहा। ये वे विषय हैं जिन्हें परमेश्वर मनुष्य पर प्रकट नहीं करता, जिन बातों का ज्ञान वह केवल स्वयं के लिए रखता है। वास्तव में, हमें सदैव स्वयं को याद दिलाते रहना चाहिए कि गुप्त, अप्रकाशित बातें अनश्वर हैं।

इसके साथ-साथ, ध्यान दें कि मूसा ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर हमसे गुप्त बातों को छिपा कर रखता है। उसने यह भी कहा है कि कुछ बातें "प्रकट" की गई हैं। अर्थात् परमेश्वर ने उन्हें अपने वचन में प्रकट किया है। और जैसे मूसा लिखता है, ये प्रकट की हुई बातें "सदा के लिए हमारे और हमारे वंश की हैं।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि जो कुछ उसने प्रकट किया है हम उस पर विश्वास करें और उसे पूरे हृदय के साथ स्वीकार कर लें। और यह तथ्य दिखाता है कि जो कुछ उसने प्रकट किया उसे बताना वैध है।

अबोधता की धर्मशिक्षा से उठने वाली चुनौतियों के अतिरिक्त, धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की वैधता को भी आधुनिक विज्ञान-संबंधी तर्कवाद के द्वारा चुनौती दी गई है।

आधुनिक विज्ञान-संबंधी तर्कवाद

पिछली दो सदियों में, अर्थात् आधुनिक विज्ञानवाद की सदियों में, कई भिन्न साहित्यिक विचाराधारा वाले लोगों ने यह तर्क दिया है कि धर्मविज्ञान एक नकली या झूठा विज्ञान है। कहने का अर्थ यह है कि, हो सकता है कि विधिवत धर्मविज्ञानी विषयपरक दावे करें, परंतु यह केवल दिखावा मात्र है। आधुनिक विज्ञान में, जब हम एक विषय की सच्चाई को जानना चाहते हैं, तो हम परिकल्पनाओं की रचना करते हैं और उन परिकल्पनाओं को प्रायोगिक या अनुभवजन्य वैधता के अधीन करते हैं। और जब एक बार परिकल्पना प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रायोगिक वैधता पर खरी उतरती है, तो हम इसके सत्य होने को स्वीकार करते हैं। परंतु वैज्ञानिक यह दर्शाने में बड़े तीव्र रहे हैं कि धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य इस तरह से नहीं जाँचे जा सकते।

अब, हम सब को यह स्वीकार करना चाहिए कि कम से कम एक भाव में तो यह सच ही है। हम एक तरल पदार्थ को तो परखनली में जाँच के लिए डालकर उसके गुणों का विश्लेषण कर सकते हैं, परंतु कोई भी परमेश्वर को परखनली में यह देखने के लिए नहीं डाल सकता है कि वह त्रिएक है या नहीं। हम चीजों के आकार की गणना के लिए औजारों का प्रयोग कर सकते हैं, परंतु ऐसा कोई भी औजार नहीं है जो यह देखने के लिए परमेश्वर को नाप सकता हो कि वह अनश्वर है या नहीं। इस कारण, बहुत से आधुनिक लोगों ने यह तर्क दिया है कि धर्मविज्ञानी कलाकारों और कवियों के सदृश हैं, जो अपनी भावनाओं, धार्मिक बोधों और मनोभावों को प्रस्तुत करते हैं। हम तो केवल स्वयं और अन्यों को मूर्ख बना रहे हैं जब हम यह दिखाते हैं कि हम विषयपरक तथ्यों का वर्णन कर रहे हैं। परंतु एक ऐसा भाव है जिसमें हम धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों को प्रयोगिक रूप से जाँच सकते हैं। यह सब इस बात का विषय है कि हम किसे अपने दृष्टिकोणों के लिए और इसके विरूद्ध प्रायोगिक प्रमाण के रूप में मानते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम धर्मविज्ञान में सत्यापन के उस मापदंड का अनसुरण करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जिसका अनुसरण उसने किया। और कैसे यीशु ने अपने धर्मवैज्ञानिक दावे को वैध ठहराया? उसने अन्यों के धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की जाँच कैसे की?

निश्चित है कि यीशु सामान्य प्रकाशन पर निर्भर रहा; सब बातों में परमेश्वर के प्रकाशन पर। यीशु पवित्र आत्मा की प्रदीप्ती पर निर्भर रहा, जैसा कि हमें भी आज होना चाहिए। परंतु यीशु ने शिक्षा दी कि त्रुटिरहित पवित्रशास्त्र धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों की जाँच के लिए सबसे स्पष्ट और सबसे अधिक आधिकारिक प्रमाण का स्रोत है। जब यीशु धर्मवैज्ञानिक दावों की जाँच करना चाहता था, तो वह अपने प्रायोगिक मापदंड के रूप में बार-बार पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ा। उदाहरण के लिए, मत्ती 15:7 में जब यीशु ने फरीसियों के पाखंड को चुनौती दी, तो उसने ऐसा पवित्रशास्त्र का उल्लेख करते हुए किया। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **"हे कपटियो! यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की है" (मत्ती 15:7)।**

यीशु ने परमेश्वर को परखनली में नहीं डाला था, परंतु उसने धर्मवैज्ञानिक विचारों को अवश्य परखा। उसने पवित्रशास्त्र के प्रायोगिक मापदंड के द्वारा उनका सावधानी के साथ मूल्यांकन करते हुए धर्मवैज्ञानिक प्रस्तावों को नापा। मसीह के अनुयायी होने के नाते, हमें इस आरोप को स्वीकार नहीं करना चाहिए कि धर्मविज्ञान परमेश्वर के बारे में बिना किसी प्रायोगिक जांच के विचारों को प्रस्तावित करता है। मसीही दृष्टिकोण से, विधिवत धर्मविज्ञान के दावे धार्मिक मनोभावों की अभिव्यक्तियों से कहीं अधिक हैं। वे पवित्रशास्त्र की प्रायोगिक जाँच के द्वारा प्रमाणित और ख़ारिज किए जाते हैं।

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य क्या हैं और कैसे वे धर्मवैज्ञानिक तथ्यों को अभिव्यक्त करने के वैध तरीके हैं, हमें अपने तीसरे विचार की ओर मुड़ना चाहिए : विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण में उनका स्थान।

स्थान

पिछले अध्याय में हम देख चुके हैं कि प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान ने कई उन प्राथमिकताओं का अनुसरण किया जिन्हें मध्यकालीन धर्मवैज्ञानिकों ने तब विकसित किया था, जब उन्होंने अरस्तू के दर्शनशास्त्र के साथ परस्पर व्यवहार किया था।

और फलस्वरूप, विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण चार मुख्य चरणों की मांग करता है : तकनीकी शब्दों, तर्क-वाक्यों, धर्मशिक्षारुपी कथनों, और धारणाओं की व्यापक प्रणाली की रचना। अब, हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि इस तरह से बात करना कुछ हद तक कृत्रिम है। विधिवत धर्मविज्ञानी वास्तव में हर समय इन सभी चरणों में स्वयं को शामिल करते हैं। परंतु स्पष्टता के लिए, यह प्रक्रिया के बारे में इस प्रकार सोचने में सहायता करता है जैसे यह इस प्रयास के सरलतम से पेचीदा तत्वों की ओर आगे बढ़ती है।

सबसे निम्न स्तर पर, धर्मवैज्ञानिक तकनीकी शब्द विधिवत धर्मविज्ञान की सबसे मूलभूत इकाइयों का निर्माण करते हैं। सावधानी से परिभाषित शब्दावली के बिना ठोस विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना अत्यंत कठिन होगा। प्रक्रिया में दूसरा चरण तर्क-वाक्यों की रचना का है। यदि हम तकनीकी शब्दों को विधिवत प्रक्रियाओं में मूलूभूत इकाइयों के रूप में सोचते हैं, तो तर्क-वाक्यों को इकाइयों की उन कतारों के रूप में सोचना भी सही हो सकता है जो तकनीकी शब्दों को स्पष्ट करते हैं और उनका वर्णन करते हैं। विधिवत धर्मविज्ञानी परमेश्वर के बारे में उसके संबंध में सृष्टि के बारे में कथनों की रचना करने के द्वारा इकाइयों की इन कतारों की रचना करते हैं। और यदि हम तर्क-वाक्यों को

इकाइयों की कतारों के रूप में सोचते हैं, तो हम धर्मशिक्षारुपी कथनों का वर्णन दीवारों के हिस्से या पूरी दीवारों के रूप में कर सकते हैं जिनका निर्माण तर्कवाक्यों की इन कतारों से हुआ है। और अंत में, धर्मविज्ञान की पद्धति उन तरीकों को प्रस्तुत करती है जिन पर धर्मविज्ञानी धर्मशिक्षारुपी कथनों से एक पूरे भवन का निर्माण करते हैं। यह रूपक तर्कवाक्यों के उस मूलभूत स्थान का सुझाव देता है जो वे विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण में रखते हैं – ये सावधानी के साथ रखी गई इकाइयों की वे कतारें हैं, जो विधिवत धर्मविज्ञान नामक पूरी संरचना का भाग बन गई हैं।

उदाहरण के लिए, इस कथन को ही लें, "यीशु त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व है।" यह दावा कम से कम दो तकनीकी शब्दों के साथ किया जाता है : "व्यक्ति" और "त्रिएकता।" परंतु यह तर्क-वाक्य इन शब्दों और उनसे संबंधित अवधारणाओं को अलग-थलग नहीं छोड़ता, बल्कि उन्हें यीशु के बारे में एक सीधे सीधे तथ्यात्मक दावे में एक साथ रख देता है। अब, इस और अन्य तर्क-वाक्यों से, विधिवत धर्मविज्ञानी त्रिएकता की पूरी धर्मशिक्षा की रचना करते हैं। और त्रिएकता की धर्मशिक्षा परमेश्वर की धर्मशिक्षा का एक भाग है, जो कि भवन अर्थात् मसीही धर्मविज्ञान की पूरी पद्धति की एक दीवार है।

यह याद रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जब विधिवत धर्मविज्ञानी धर्मविज्ञान के बारे में चर्चा करते या लिखते हैं, तो वे हर तरह की अलंकृत तकनीकों का प्रयोग करते हैं। वे विचारों को प्रस्तावित करते हैं और प्रमाणों के साथ उनको समर्थित करते हैं। वे अन्य लोगों के विचारों का समर्थन करते हैं और उनकी समीक्षा करते हैं। वे अलंकृत प्रश्न पूछते हैं। वे विचारों के ऐतिहासिक विकास को खोजते हैं। वे प्रयोजनों को दर्शाते हैं और विभिन्न तरह की मान्यताओं के सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों की ओर संकेत करते हैं। अलंकृत तकनीकों की एक बहुत बड़ी सूची उनकी अँगुलियों पर होती है। परंतु, धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य इन सभी व्याख्याओं, तर्कों, बचावों और प्रेरक तकनीकों को सुदृढ़ करते हैं जिन्हें हम विधिवत प्रक्रियाओं में पाते हैं। और वे विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया के एक मूलभूत भाग की रचना करते हैं।

अब जबकि हमारे पास विधिवत प्रक्रियाओं में तर्क-वाक्यों का एक सामान्य दिशा-निर्धारण है, इसलिए हमें अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना। विधिवत धर्मविज्ञानी उन तर्क-वाक्यों की रचना कैसे करते हैं जिनके द्वारा वे अपने धर्मविज्ञान का निर्माण करते हैं।

रचना

अपने तर्क-वाक्यों की रचना करते समय जिन प्रक्रियाओं का अनुसरण अनुभवी धर्मविज्ञानी करते हैं, वे बहुत जटिल होती हैं। इसलिए, जब हम यह खोज करते हैं कि उनकी रचना कैसे की जाती है, तो हमें ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी चर्चा कुछ सीमा तक बनावटी होगी। परंतु फिर भी, हम इन प्रक्रियाओं के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाएंगे जो हमारी सहायता करेगी कि हम विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण और अधिक उत्तरदायित्व के साथ करें।

हम दो मूलभूत दिशाओं में देखेंगे। पहली, हम उन तर्क-वाक्यों को देखेंगे जो उन तरीकों से निकलती हैं जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानी दर्शनशास्त्र के साथ परस्पर व्यवहार करते हैं। और दूसरी, हम उन तरीकों को और अधिक गहराई से देखेंगे जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल से तर्क-वाक्यों की रचना करते हैं। आइए सबसे पहले इस तथ्य पर ध्यान दें कि विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत से तर्क-वाक्य वास्तव में दर्शनशास्त्र से निकल कर आते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दर्शनशास्त्रीय सहभागिताएँ

आपको पिछले अध्यायों से याद होगा कि धर्माध्यक्षीय अवधि में बहुत से मसीही धर्मविज्ञानी यह मानते थे कि नीओ-प्लेटोवाद के बहुत से पहलू पवित्रशास्त्र के अनुरूप थे। अतः उन्होंने अपनी धारणाओं को दर्शनशास्त्र की जानकारी के साथ व्यक्त किया। धर्माध्यक्षीय अवधि में अधिकाँश मसीही विद्वान मानते थे कि अरस्तू का दर्शनशास्त्र कई विशेष रूपों में पवित्रशास्त्र के अनुरूप था। इसलिए जिन बहुत सी बातों को उन्होंने कहा, वे अरस्तू के दृष्टिकोण से रची गईं। और यहाँ तक कि प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान में विभिन्न आधुनिक दर्शनशास्त्रों ने महत्वपूर्ण दिशा-निर्धारणों को प्रदान किया है, चाहे वे भलाई के हों या हानि के। और फलस्वरूप, बहुत से दावे जो विधिवत धर्मविज्ञान में पाए जाते हैं वे दार्शनिक विचार-विमर्शों से निकलते हैं।

अब हमें इस बात के लिए सावधान रहना चाहिए जब हम देखते हैं कि बहुत से तर्क-वाक्य ऐसे दार्शनिक विचारों की जड़ से निकलते हैं, क्योंकि पवित्रशास्त्र हमें दर्शनशास्त्र के विरुद्ध चेतावनी भी देता है और साथ ही इसका प्रयोग करने के लिए उत्साहित भी करता है।

एक ओर तो हमें 1 कुरिन्थियों 1:20 जैसी चेतावनियों पर ध्यान देना चाहिए, जहाँ प्रेरित पौलुस ने ग़ैर-मसीही दर्शनशास्त्र का मजाक उड़ाया है :

> कहाँ रहा ज्ञानवान? कहाँ रहा शास्त्री? कहाँ इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? (1 कुरिन्थियों 1:20)।

यह महत्वपूर्ण है कि मसीही धर्मविज्ञानी, मसीही धर्मविज्ञान और ग़ैर-मसीही दर्शनशास्त्रों के बीच के मूलभूत विरोधाभास को याद रखें।

परंतु इसके साथ-साथ प्रेरितों के काम 17:27-28 में पौलुस ने यूनानी दार्शनिक विचारों वाले कवियों क्लिआंथस और ऐयराटस के शब्दों से लिए विचारों के द्वारा दार्शनिक विचारों के सकारात्मक प्रयोग को दर्शाया है।

> परमेश्वर... हम में से किसी से दूर नहीं... जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, "हम तो उसी के वंशज हैं।" (प्रेरितों के काम 17:27-28)

यह अनुच्छेद दर्शाता है कि यद्यपि हमें खतरों के प्रति जागरूक रहना चाहिए, फिर भी मसीही धर्मविज्ञानियों ने विभिन्न तरह की दार्शनिक विचारधाराओं के साथ परस्पर व्यवहार करके सही किया है। और उन्होंने ऐसे सच्चे धर्मवैज्ञानिक दावों को सम्मिलित करने के द्वारा भी सही किया है जो दार्शनिक विचारधाराओं के विचार विमर्श से निकल कर आते हैं, जैसा कि पौलुस ने भी किया था जब वह एथेंस में था।

यद्यपि हमें इन दार्शनिक विचारधाराओं के आधार के प्रति जागरूक होना चाहिए, फिर भी विधिवत प्रक्रियाओं में धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के लिए बाइबल ही सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। इसी कारण हमें उन तरीकों पर विशेष ध्यान देना चाहिए जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानी उससे अपने दावों की रचना करते हैं जिसकी शिक्षा बाइबल देती है।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम तीन दिशाओं की ओर देखेंगे : पहली, हम उन चुनौतियों पर ध्यान देंगे जिनका सामना इस संबंध में विधिवत धर्मविज्ञानी करते हैं। दूसरी, हम देखेंगे कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी इन चुनौतियों के एक पहलू को उस प्रक्रिया के द्वारा पूरा करते हैं जिसे हम "तथ्यात्मक

कटौती" का नाम देंगे। और तीसरी, हम यह खोज करेंगे कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी "तथ्यात्मक मिलान" के द्वारा इन चुनौतियों के एक अन्य पहलू को पूरा करते हैं। आइए सबसे पहले उन चुनौतियों को देखें जिनका सामना विधिवत धर्मविज्ञानी तब करते हैं जब वे बाइबल से तर्क-वाक्यों की रचना करते हैं।

चुनौतियाँ

जब धर्मविज्ञान के विद्यार्थी सबसे पहले विधिवत प्रक्रियाओं का अध्ययन करना आरंभ करते हैं तो उन पर अक्सर यह प्रभाव रहता है कि बाइबल से धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना करना सरल बात है। वे सोचते हैं कि उन्हें केवल बाइबल पढ़नी है और जो यह कहती है उसे दोहराना है। कई बार ऐसा होता भी है क्योंकि बाइबल में तर्क-वाक्य भी पाए जाते हैं, परंतु इसमें कई बड़ी चुनौतियाँ भी हैं।

मनुष्य के नश्वर होने और पाप के प्रभावों के अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना करने में कम से कम दो चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। एक चुनौती उस साहित्यिक भिन्नता के कारण उठती है जिसे हम बाइबल में पाते हैं। और दूसरी चुनौती बाइबल की धर्मशिक्षा-संबंधी व्यवस्था से उठती है। आइए पहले उन मुश्किलों पर ध्यान दें जिनका सामना विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र की साहित्यिक भिन्नता के कारण करते हैं।

बाइबल एक सपाट साहित्यिक भूमि नहीं है जो एक ही तरह की सामग्री बार-बार दोहराए। इसकी अपेक्षा, कई तरह की शैलियाँ संपूर्ण बाइबल में पाई जाती हैं और वे असँख्य तरीकों से एक दूसरे के साथ जुड़ती हैं। यदि कुछ का नाम बताएँ, तो बाइबल में इतिहास, व्यवस्था, काव्य, भविष्यवाणी, और पत्रियों का मिश्रण पाया जाता है। इनमें से प्रत्येक वृहत शैली में विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियाँ होती हैं, जैसे : कथन, आज्ञाएँ, प्रश्न, शिकायतें, उत्साह-वचन, विस्मय- वचन, आशीष-वचन, उद्धरण, सूचियाँ, विधियाँ, शीर्षक, तकनीकी निर्देश, हस्ताक्षर आदि। यह सूची आगे, और आगे बढ़ती रहती है। और इन सभी भिन्नताओं के साथ-साथ भाषा-अलंकार और अन्य साहित्यिक जटिलताएं भी होती हैं जो कई भिन्न रूपों में पवित्रशास्त्र को सुसज्जित करती हैं। यह बड़ी साहित्यिक विविधता धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना को जटिल बना देती है।

एक क्षण के लिए कल्पना करें कि यदि बाइबल केवल सीधे सीधे तर्क-वाक्यों से ही बनी हुई पुस्तक होती, अर्थात् उसमें एक के बाद एक धर्मवैज्ञानिक तथ्य होते। यदि ऐसा होता, तो विधिवत धर्मविज्ञान में बाइबल का प्रयोग करना अपेक्षाकृत आसान होता। परंतु निसंदेह, पवित्रशास्त्र ऐसा नहीं है; यह साहित्यिक रूप से विविधता से भरा है।

अब कल्पना करें कि विधिवत धर्मविज्ञानी बड़ी साहित्यिक विविधता के साथ अपने धर्मविज्ञान को व्यक्त करने की ओर झुकाव रखते हों। कल्पना करें उनका धर्मविज्ञान काव्य, इतिहास, आज्ञाओं, पत्रियों, शिकायतों, अलंकारों और ऐसी ही अन्य बातों से भरा हुआ हो। यदि ऐसा होता तो एक बार फिर से पवित्रशास्त्र और विधिवत प्रक्रियाओं की प्रस्तुति एक दूसरे के साथ उपयुक्त बैठती। परंतु निसंदेह, बात ऐसी भी नहीं है।

सच्चाई यह है कि बाइबल साहित्यिक रूप से विविधतापूर्ण है, परंतु विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल की शिक्षा को लगभग तर्क-वाक्यों में ही व्यक्त करते हैं। वास्तव में विधिवत धर्मविज्ञानियों को बाइबल में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के साहित्यों को एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति में समाहित करना पड़ता है। और यह विषमता उन बड़ी चुनौतियों में से एक है जिनका सामना विधिवत धर्मविज्ञानी करते हैं।

एक दूसरी चुनौती जिसे पवित्रशास्त्र विधिवत धर्मविज्ञानियों के समक्ष प्रस्तुत करता है, वह तरीका है जिसमें यह अपनी धर्मशिक्षाओं को व्यवस्थित करता या नहीं करता है। एक शब्द में, पवित्रशास्त्र विशेष विषयों के साथ पूरी, अलग इकाइयों में परस्पर व्यवहार नहीं करता। इसकी अपेक्षा, पूरी बाइबल में इसी विषय को अक्सर थोड़ा थोड़ा करके और यहाँ-वहाँ बिखरे टुकड़ों में संबोधित करता है। और पवित्रशास्त्र का यह गुण विधिवत धर्मविज्ञानियों के सामने भी चुनौती रखता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कल्पना करें कि बाइबल इस विषय में भिन्न होती। मान लें कि यह एक ही समय में एक ही धर्मशिक्षा के साथ के बारे में ही पूरी तरह से बताती। मान लें कि बाइबल नियमित रूप से एक ही विषय के बारे में बताती, इसके बारे में पूरी तरह से चर्चा करती और फिर अगले विषय की ओर बढ़ती। यदि ऐसा होता, तो शायद विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल के प्रत्येक भाग को केवल पढ़ते और आसानी से बाइबल के प्रत्येक भाग पर आधारित धर्मवैज्ञानिक दावों की रचना करते। परंतु निसंदेह, बाइबल अपने धर्मवैज्ञानिक विषयों को इस प्रकार प्रस्तुत नहीं करती।

या कल्पना करें कि विधिवत धर्मविज्ञानी थोड़ा कम व्यवस्थित होते, एक समय में एक ही विषय के छोटे से पहलू को ही देखते, और मान लें कि वे सामान्य रूप से पहली धर्मशिक्षा के दूसरे छोटे पहलू को संबोधित करने के लिए मुड़ने से पहले अन्य धर्मशिक्षाओं के कई अन्य छोटे छोटे हिस्सों को संबोधित करते। यदि वे विषय को यहाँ-वहाँ और छोटे-छोटे हिस्सों में संबोधित करने में ही संतुष्ट होते, तो शायद उनके लिए पवित्रशास्त्र के साथ काम करना अपेक्षाकृत सरल होता।

परंतु निसंदेह, यह वह नहीं है जो विधिवत धर्मविज्ञानी करना चाहते हैं। वे पवित्रशास्त्र की शिक्षा को जितना हो सके उतने संपूर्ण और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं। और इसके फलस्वरूप, उन्हें पवित्रशास्त्र के सभी स्थानों से जानकारी को लेकर एक साथ जोड़ने में कड़ी मेहनत करनी होती है।

पवित्रशास्त्र धर्मवैज्ञानिक विषयों के पहलुओं को विभिन्न तरीकों से विभिन्न स्थानों पर दर्शाता है और बाइबल द्वारा धर्मविज्ञान की प्रस्तुति की यह विशेषता विधिवत धर्मविज्ञानियों के लिए एक और बड़ी चुनौती है।

अब जबकि हमने उन दो मुख्य चुनौतियों को देख लिया है जिनका सामना विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र के साथ कार्य करते हुए करते हैं, हमें अपना ध्यान तथ्यात्मक कटौती की प्रक्रिया की ओर लगाना चाहिए। यह वह रणनीति है जिसका प्रयोग विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल की साहित्यिक विविधिता की चुनौती पर जय पाने के लिए करते हैं।

तथ्यात्मक कटौती

सरल शब्दों में :

> **तथ्यात्मक कटौती ऐसे धर्मवैज्ञानिक तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया है, जिनकी शिक्षा बाइबल के अनुच्छेद देते हैं और उन्हीं अनुच्छेदों के अन्य पहलुओं को हाशिए पर डाल देते हैं।**

जैसा कि मनुष्य की भाषा में सामान्य रूप से पाया जाता है, बाइबल के अनुच्छेदों की रचना ऐसे की गई थी कि वे पाठकों पर बहुत से प्रभाव छोड़ें। उन्होंने जानकारी दी, प्रेरित किया, आरोप लगाया, उत्तेजित किया, निर्देश दिया, उत्साहित किया, निरूत्साहित किया, आनंदित किया, व्याकुल किया, सुधारा, प्रशिक्षित किया, सहायता की, आशीष दी, शापित किया, कल्पना को उत्तेजित किया और बहुत से कार्य किए। अब बाइबल के सभी अनुच्छेदों को हर समय पर समान प्रभाव के साथ इन सब कार्यों को करने के लिए नहीं रचा गया था, बल्कि बाइबल के प्रत्येक लंबे अनुच्छेद को विभिन्न प्रकार के प्रभाव डालने के लिए रचा गया था।

परंतु विधिवत धर्मविज्ञानी अपने ध्यान को यदि पूरी तरह से नहीं, फिर भी प्राथमिक रूप से पवित्रशास्त्र में सिखाए गए धर्मवैज्ञानिक तथ्यों पर केंद्रित करते हैं। दूसरे शब्दों में, विधिवत धर्मविज्ञानी तथ्यात्मक विषयों पर अपने ध्यान को कम करते हैं, जबकि बाइबल आधारित लेखनों के अन्य गुण व्यापक रूप से ऐसे भी होते हैं जिन पर ध्यान नहीं दिया जाता।

अब तथ्यों की ओर पवित्रशास्त्र की कटौती की प्रक्रिया तुलनात्मक रूप से बिलकुल सीधी है जब बाइबल के अनुच्छेदों की रचना प्राथमिक रूप से तथ्यात्मक दावों को दर्शाने के लिए की गई हो। इस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तरह की परिस्थितियों में विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल के किसी लेख में प्रस्तुत केवल स्पष्ट और अस्पष्ट तथ्यों पर ध्यान देते हैं, और फिर उन तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो उनके विचार-विमर्श के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

ऐसे अनुच्छेद के उदाहरण के लिए 2 तीमुथियुस 3:16 को लें जो तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। वहाँ पर पौलुस ने यह कहा :

> संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है (2 तीमुथियुस 3:16)।

अब, व्यापक संदर्भ में, हम कह सकते हैं कि इस पद की रचना का उद्देश्य बाइबल के बारे में तथ्यों की केवल एक सूची देने से बढ़कर था। पौलुस ने इस पद को पहले के संदर्भ के साथ जोड़ा ताकि वह तीमुथियुस को प्रेरित कर सके कि वह पवित्रशास्त्र पर और अधिक ध्यान केंद्रित करे। कम से कम, इस पद की रचना इसलिए की गई कि तीमुथियुस को पवित्रशास्त्र के प्रति उसकी प्रतिबद्धताओं को फिर से नया करने के लिए उत्साहित और प्रेरित किया जाए। परंतु इस जटिल रूपरेखा का प्रमुख पहलू कई स्पष्ट धर्मवैज्ञानिक कथनों को कहने का था। और विधिवत धर्मविज्ञानी इस अनुच्छेद का बहुत प्रयोग करते हैं क्योंकि वे इन तथ्यात्मक धर्मवैज्ञानिक दावों के प्रति रूचि रखते हैं।

इस संदर्भ के स्पष्ट तथ्यों को सार्वभौमिक और सकारात्मक तर्क-वाक्यों की एक श्रृंखला में सारगर्भित किया जा सकता है। “संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।” “संपूर्ण पवित्रशास्त्र उपदेश देने के लिए लाभदायक है।” “संपूर्ण पवित्रशास्त्र समझाने के लिए लाभदायक है।” “संपूर्ण पवित्रशास्त्र सुधारने के लिए लाभदायक है।” संपूर्ण पवित्रशास्त्र धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है।” ये तर्क-वाक्य इस पद के द्वारा स्पष्ट रूप से बताए गए तथ्यात्मक विचार-विमर्श को दर्शाते हैं।

इन स्पष्ट दावों के अतिरिक्त, यह पद तार्किक रूप से कई अन्य स्पष्ट दावों को भी दर्शाता है जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानियों की रूचि रहती है। उदाहरण के लिए, यह कहना उचित है कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा को बताना चाहा। इस अनुच्छेद का यह भी अर्थ निकलता है कि पवित्रशास्त्र के प्रति ध्यान पवित्रीकरण के लिए महत्वपूर्ण है। और यद्यपि पौलुस ने विशेषकर पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के बारे में बात की है, फिर भी उसका अर्थ यह भी था कि नए नियम का पवित्रशास्त्र भी प्रेरणा-प्राप्त है और इन रूपों में लाभदायक है।

इन स्पष्ट और अस्पष्ट धर्मवैज्ञानिक तथ्यों के वर्णन के साथ, विधिवत धर्मविज्ञानी फिर इन सत्यों का प्रयोग भिन्न धर्मवैज्ञानिक विषयों के प्रति अपने व्यवहारों को स्पष्ट करने और उसका बचाव करने के लिए कर सकते हैं। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह पद पवित्रशास्त्र की धर्मशिक्षा के विषय में किए जाने वाले दावों के समर्थन के लिए विधिवत धर्मविज्ञान में बार-बार प्रकट होता है।

उदाहरण के लिए, रॉबर्ट रेयमंड अपनी पुस्तक सिस्टेमेटिक थियोलोजी के दूसरे अध्याय में 2 तीमुथियुस 3:16 का उल्लेख अपने इस दावे के समर्थन के लिए करता है कि पवित्रशास्त्र त्रुटिरहित है। वहाँ उसने यह लिखा है :

> बाइबल के लेखक परमेश्वर के लिखित वचन के त्रुटिरहित होने का दावा करते हैं जो उसने प्रेरणा के द्वारा उनके माध्यम से मनुष्यजाति को दिया है।

इस तरह का कथन एक ऐसा विशिष्ट तरीका है जिसमें इस पद का प्रयोग विधिवत प्रक्रियाओं में किया जाता है। परंतु 2 तीमुथियुस 3:16 में सिखाए गए स्पष्ट और अस्पष्ट धर्मवैज्ञानिक तथ्य अन्य पारंपरिक धर्मवैज्ञानिक विषयों को भी संबोधित करते हैं। उदाहरण के लिए, विधिवत धर्मविज्ञानी इस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अनुच्छेद का उल्लेख ईश-विज्ञान के विषय के तहत इस प्रमाण के रूप में कर सकते हैं कि परमेश्वर दयालु है क्योंकि उसने स्वयं को मनुष्यजाति पर प्रकट किया है। वे इसका प्रयोग कलीसियाई विज्ञान की धर्मशिक्षा में यह स्थापित करने के लिए कर सकते हैं कि पवित्रशास्त्र का पढ़ा जाना और प्रचार कलीसिया में अनुग्रह प्राप्त करने के माध्यम हैं। वे इसका उल्लेख युगांतविज्ञान के विषय के तहत बाइबल आधारित भविष्यवाणी की विश्वसनीयता को स्थापित करने के लिए भी कर सकते हैं। संभावनाएँ बहुत सी हैं।

बाइबल के ऐसे अनुच्छेदों के साथ जो धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों से बहुत मिलते-जुलते हैं, तथ्यात्मक कटौती की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल है। जब हम उत्पत्ति 1:1 में पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने सब वस्तुओं की रचना की तो इस तथ्य को समझना कठिन नहीं होता कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। जब हम यशायाह 6:3 में पढ़ते हैं कि साराप यहोवा की उपस्थिति में यह पुकार उठे, "पवित्र, पवित्र, पवित्र," तो यह निष्कर्ष निकालना सरल है कि परमेश्वर पवित्र है। जब हम रोमियों 3:28 में पढ़ते हैं कि धर्मी ठहराना कार्यों के द्वारा नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा होता है तो हम इस कथन को उद्धारविज्ञान के हमारे विचार-विमर्श में ला सकते हैं। पवित्रशास्त्र के कई अनुच्छेद ऐसे दावे करते हैं जिन्हें बड़ी आसानी से विधिवत धर्मविज्ञान में लाया जा सकता है। और इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि विधिवत धर्मविज्ञानी बार-बार इस तरह के अनुच्छेदों से बातों को लेते हैं।

परंतु तथ्यात्मक कटौती की प्रक्रिया तब बहुत जटिल होती है जब बाइबल के अनुच्छेद धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के मिलते-जुलते नहीं होते। इस तरह की परिस्थितियों में विधिवत धर्मविज्ञानी उन अनुच्छेदों के साहित्यिक गुणों पर सावधानी से ध्यान देते हैं ताकि वे उन तथ्यों को पहचान सकें जिनकी शिक्षा ये अनुच्छेद देते हैं। तब वे उन वर्णित तथ्यों का प्रयोग धर्मविज्ञान की अपनी चर्चा में करते हैं। उदाहरण के लिए, नीतिवचन कई बार सरल धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के रूप में दिखाई देते हैं, परंतु सामान्यतः वे ऐसे नहीं होते। नीतिवचन 23:13-14 पर ध्यान दें जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> लड़के की ताड़ना न छोड़ना, क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा। तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा। (नीतिवचन 23:13-14)

अब पहली नज़र में यह नीतिवचन दो तथ्यात्मक दावे करता प्रतीत होता है। यह कहता है कि वह बच्चा जो अनुशासित है, "न मरेगा।" और यह कहता है कि एक पिता जो अपने पुत्र को अनुशासित करना है "उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा।"

परंतु नीतिवचन की शैली में, इस तरह के कथन कभी भी स्पष्ट रूप से सीधे-सीधे तर्क-वाक्य नहीं होते। एक सचेत व्याख्याकार यह देखेगा कि ये पद अनुशासन के प्रभावकारी होने के बारे में सीधे-सीधे दावे नहीं करते और न ही इस बात के प्रति आश्वस्त करते हैं। इसकी अपेक्षा, ये पद एक बुद्धिमान पिता को उत्साहित करते हैं कि वे अपने बच्चों को अनुशासित करें क्योंकि अनुशासन उनके बच्चों के जीवनों में सकारात्मक परिणामों को उत्पन्न करता है। सच्चाई तो यह है कि जैसे इन पदों के पहले भाग दर्शाते हैं, इस नीतिवचन की रचना प्राथमिक रूप से पिता को एक उपदेश देने के लिए की गई थी। बुद्धिमान ने कहा है, "लड़के की ताड़ना न छोड़ना।" पिता को यहाँ अपने बच्चों को अनुशासित करने की सलाह दी गई है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए विधिवत धर्मविज्ञानी कई अस्पष्ट तथ्यों का वर्णन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, मानवविज्ञान की धर्मशिक्षा के तहत विधिवत धर्मविज्ञानी इस अनुच्छेद का प्रयोग एक प्रमाण के लिए कर सकते हैं कि बच्चे पापमाय होते हैं। पवित्रीकरण के विषय के तहत वे इसका प्रयोग इस बात को स्थापित करने के लिए कर सकते हैं कि माता-पिता की ओर से किए जाने वाले अनुशासन की रचना पवित्रता में बढ़ोतरी के लिए की गई है।

काफी रूचि की बात है कि कम से कम एक विधिवत धर्मविज्ञानी ने युगांतविज्ञान के एक दृष्टिकोण को समर्थन देने के लिए वास्तव में इस अनुच्छेद का प्रयोग किया है। लुईस ब्रकोफ़ ने अपनी

पुस्तक सिस्टेमेटिक थियोलोजी के तीसरे अध्याय के भाग 6 में नीतिवचन 23:14 का प्रयोग मृतकों के पुनरूत्थान की धर्मशिक्षा के एक पहलू पर प्रकाश डालने के लिए किया है। उसने यह कहा :

> निश्चित रूप से प्रमाणों की कमी नहीं है कि बंधुआई से बहुत पहले भी पुनरूत्थान में विश्वास पाया जाता था। इस अनुच्छेद में यह अर्थ निहित है जो अधोलोक से प्राण के छुटकारे के बारे में कहता है।

यहाँ ब्रकोफ़ निष्कर्ष निकालता है कि नीतिवचन 23:14 के शब्दों "उसके प्राण को अधोलोक से बचाएगा," ने यह दर्शाया कि पुराने नियम में विश्वासयोग्य इस्राएलियों ने मृतकों के सामान्य पुनरूत्थान पर विश्वास किया था। एक बड़ी तथ्यात्मक कटौती के द्वारा ब्रकोफ़ ने युगांतविज्ञान के एक पहलू का समर्थन एक ऐसे अनुच्छेद के द्वारा किया जिसकी रचना प्राथमिक रूप से एक पिता को अपने बच्चों को अनुशासित करने के लिए की गई थी।

अब, कई बार तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करना और भी अधिक कटौतीभरा हो सकता है। उदाहरण के लिए, आपको याद होगा कि विधिवत धर्मविज्ञानी जितना हो सके बातों को उतने प्रत्यक्ष रूप से कहने का प्रयास करते हैं। इसलिए यदि किसी अनुच्छेद में भाषा के अलंकार हों तो विधिवत धर्मविज्ञानी यह स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं कि भाषा के उन अलंकारों का सीधा-सीधा अर्थ क्या है।

मिलार्ड एरिक्सन की पुस्तक ख्रिस्टियन थियोलोजी के 48वें अध्याय में इस तरह की नाटकीय तथ्यात्मक कटौती पर ध्यान दें, जहाँ उसने परमेश्वर के वचन की चर्चा अनुग्रह के माध्यम के रूप में की है। उसने परमेश्वर के वचन के लिए रूपकों और उपमाओं की एक श्रृंखला पर ध्यान दिया जो बाइबल के अनुच्छेदों के एक संकलन में पाए जाते हैं। वह इस प्रकार लिखता है :

> परमेश्वर के वचन की प्रकृति और कार्यप्रणाली को दर्शाने के लिए चित्रों की एक घनी श्रृंखला है, वह ...एक हथौड़ा...एक दर्पण...एक बीज...वर्षा और बर्फ... दूध... शक्तिशाली भोजन...सोना और चाँदी...एक दीपक...एक तलवार...[और] एक आग है।

अब एरिक्सन द्वारा इन चित्रों का उल्लेख करने की वास्तविकता भी विधिवत धर्मविज्ञान के लिए थोड़ी असामान्य बात है। फिर भी, हमें ध्यान देना चाहिए कि इन चित्रों द्वारा पाठकों पर पड़ सकने वाले घने काल्पनिक प्रभाव की खोज करने की अपेक्षा उसने उन्हें तथ्यात्मक कटौती के माध्यम से एक सरल और सीधे-सीधे तर्क-वाक्य में सारगर्भित किया। वह इस प्रकार लिखता है :

> ये चित्र चित्रित रूप में इस विचार को दर्शाते हैं कि परमेश्वर का वचन सामर्थी है और एक व्यक्ति के जीवन में महान कार्य को पूरा करने में सक्षम है।

अब मैं किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना नहीं कर सकता जो गंभीरता के साथ उसके इस आकलन से असहमत हो, परंतु यह भी स्पष्ट है कि उसका यह आकलन व्यापक तथ्यात्मक कटौती के फलस्वरूप है, जिसमें वह इन चित्रों के व्यापक प्रभाव को केवल उस तथ्य को सामान्य रूप से कहने के कारण हाशिए पर कर देता है जिसे उन्होंने प्रमाणित किया।

जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं, तथ्यात्मक कटौती की प्रक्रिया इस तरीके से कई अनुच्छेदों के साथ कार्य करती है। उदाहरण के लिए, हम निर्गमन 20:3 की पहली आज्ञा से कह सकते हैं, जहाँ पर परमेश्वर कहता है कि उसके सामने और कोई ईश्वर नहीं होना चाहिए, कि पवित्रशास्त्र का परमेश्वर अन्य सभी अलौलिक शक्तियों से सर्वोच्च है। हम भजन संहिता 105 के पहले पद से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं, जो परमेश्वर की प्रशंसा की बुलाहट देता है, कि परमेश्वर प्रशंसा के योग्य है। जब बाइबल के अनुच्छेदों की रचना उसके पाठकों पर अनेक प्रभावों को छोड़ने के लिए की गई हो, तब भी विधिवत धर्मविज्ञानी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अधिकतर तथ्यात्मक विषयवस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और इन तथ्यों को प्रत्यक्ष धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों में स्पष्ट करते हैं।

विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल आधारित साहित्य की विविधता की चुनौती पर तथ्यात्मक कटौती की प्रक्रिया के माध्यम से विजय पाते हैं। परंतु वे बाइबल की धर्मशिक्षारुपी व्यवस्था की चुनौती का सामना एक ऐसी प्रक्रिया के द्वारा करते हैं, जिसे हम "तथ्यात्मक मिलान" कहेंगे।

तथ्यात्मक मिलान

क्योंकि किस एक विशेष विषय पर पवित्रशास्त्र की शिक्षाएँ पूरी बाइबल में बिखरी हुई हैं, इसलिए विधिवत धर्मविज्ञानियों को अपने तर्क-वाक्यों की रचना के लिए पूरी बाइबल में से अनुच्छेदों को मिलाना या इकट्ठा करना पड़ता है। यह देखना असामान्य नहीं है कि उत्पत्ति के अनुच्छेदों को रोमियों की पत्री के अनुच्छेदों के साथ, या भजन संहिता के भागों को याकूब के पदों के साथ, या मत्ती के हिस्सों को प्रकाशितवाक्य के साथ रख दिया जाता है। अनुच्छेदों को बाइबल के बहुत ही भिन्न हिस्सों से इकट्ठा किया जाता है और एक दूसरे के साथ जोड़ दिया जाता है क्योंकि वे मिलते-जुलते धर्मवैज्ञानिक तथ्यों को सिखाते हैं।

पवित्रशास्त्र के विभिन्न भागों के तथ्यों के मिलान की प्रक्रिया कई भिन्न पद्धतियों का अनुसरण करती है, परंतु इसे सरल बनाने के लिए हम उन दो मुख्य तरीकों का उल्लेख करेंगे जिसमें यह किया जाता है। एक ओर, कुछ अनुच्छेदों का मिलान किया जाता है, उन्हें इकट्ठा किया जाता है क्योंकि वे एक समान तथ्यों को दोहराते हैं। दूसरी ओर, कुछ अनुच्छेदों का मिलान इसलिए किया जाता है या उन्हें इकट्ठा किया जाता है क्योंकि वे एक साथ एक जटिल धर्मवैज्ञानिक दावे की रचना करते हैं। आइए इन दो प्रक्रियाओं को विस्तार से देखें।

पहली, विधिवत धर्मविज्ञानी अक्सर धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों का निर्माण ऐसे अनुच्छेदों से करते हैं जो एक समान मूलभूत विचार को दोहराते हैं।

हम बहुत बार अपने प्रतिदिन के जीवन में इस तरीके से सोचते रहते हैं। मान लें कि आपको लगे कि आपने कुछ पैसा खो दिया है। आप क्या करेंगे? आप अपनी जेब में रखे पैसों की गिनती करेंगे। परंतु यदि आप फिर भी आश्वस्त नहीं हों, तो आप उसे तब तक बार-बार गिनते रहेंगे जब तक आप पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो जाते कि या तो आपने पैसों को खोया है या नहीं खोया है।

कई रूपों में विधिवत धर्मविज्ञानी भी कुछ ऐसा ही करते हैं जब वे पवित्रशास्त्र के ऐसे पदों का मिलान करते हैं जो एक ही जैसे धर्मवैज्ञानिक तथ्यों को दोहराते हैं। उन्हें शायद लगता हो कि उन्होंने एक अनुच्छेद को अच्छी तरह से समझ लिया है। वे शायद मानते हों कि उन्होंने इससे एक सच्चे धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य की रचना कर ली है। इसलिए वे बाइबल के कई हिस्सों को देखते हैं कि क्या वही अभिप्राय वहाँ भी पाया जा सकता है या नहीं।

उदाहरण के लिए, जब लुईस ब्रकोफ़ ने अपनी पुस्तक सिस्टेमेटिक थियोलोजी के पहले हिस्से के आठवें अध्याय में मसीह के परमेश्वरत्व पर चर्चा की, तो यह दावा किया :

> **[बाइबल] स्पष्टता से पुत्र के परमेश्वरत्व की पुष्टि करती है।**

परंतु क्योंकि ब्रकोफ़ जानता था कि बहुत से लोगों ने इस दावे को नकार दिया है, इसलिए उसने अपने दृष्टिकोण का समर्थन केवल एक ही अनुच्छेद से नहीं किया। इसकी अपेक्षा, उसने दर्शाया कि इस धर्मवैज्ञानिक तथ्य का दावा यूहन्ना 1:1, यूहन्ना 20:28, रोमियों 9:5, फिलिप्पियों 2:6, तीतुस 2:13 और 1 यूहन्ना 5:20 में बड़ी स्पष्टता के साथ किया गया है। ऐसी स्थिति में ब्रकोफ़ ने नए नियम की पाँच भिन्न पुस्तकों में से पदों का मिलान किया क्योंकि उन्होंने एक ही जैसी शिक्षा को दोहराया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हममें से बहुतों ने इस सिद्धांत के बारे में सुना होगा कि हमें सदैव मुख्य धर्मशिक्षाओं लिए पवित्रशास्त्र के विभिन्न अनुच्छेदों से समर्थन पाने का प्रयास करना चाहिए। इस सिद्धांत का अनुसरण करने का कारण यह है कि बाइबल के एक अकेले अनुच्छेद को गलत रीति से समझ लिया जाना बहुत आसान है। इस बात की पुष्टि करने का एक तरीका कि हमने एक अनुच्छेद के दावे को सही तरीके से समझ लिया है, यह दिखाना है कि यही दावा बाइबल के अन्य हिस्सों में भी दोहराया गया है।

अन्य अध्यायों में हमने "निश्चितता के शंकु" नामक नमूने का प्रयोग करके धर्मवैज्ञानिक निश्चितता के बारे में बात की है। हमने ध्यान दिया था कि जिम्मेदार मसीही धर्मविज्ञानी केवल यह निर्धारित करने में ही रुचि नहीं रखते कि किस बात पर विश्वास किया जाए, बल्कि साथ ही अपने बोधों की सामर्थ का उन बोधों के प्रमाण की सामर्थ के साथ समन्वय कराने में भी रुचि रखते हैं। कई रूपों में, हम इसीलिए ऐसे पदों का मिलान करते हैं जो समान धर्मवैज्ञानिक तथ्यों को दोहाराते हैं। जब हम किसी तर्क-वाक्य के लिए दोहराते हुए पदों के समर्थन को नहीं पाते, तो हमें उस तर्क-वाक्य में अपने भरोसे को निम्न स्तर पर रखना चाहिए। परंतु पवित्रशास्त्र में एक तथ्य को बार-बार देखना एक ऐसा सामान्य तरीका है जिससे हम और भी अधिक भरोसे को प्राप्त कर सकते हैं।

दोहराने वाला मिलान जितना भी महत्वपूर्ण हो, विधिवत धर्मविज्ञानी धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के समर्थन के लिए बाइबल के अनुच्छेदों का मिलान भी करते हैं। दूसरे शब्दों में, विधिवत धर्मविज्ञानी पूरी बाइबल में विभिन्न तथ्यात्मक दावों को पाते हैं, और वृहत, बहुआयामी धर्मवैज्ञानिक पुष्टियों की रचना करने के लिए उन्हें इकट्ठा करते हैं।

आइए मिश्रित मिलान की प्रक्रिया को प्रतिदिन के जीवन के एक उदाहरण से स्पष्ट करें। कल्पना करें कि जैसे ही मैं बाहर जाने वाला होता हूँ, मुझे गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई देती है और मुझे लगता है कि वर्षा हो रही है। मैं अपने संदेह को कैसे दूर करता हूँ? एक तरीका अन्य बातों पर ध्यान देने का है जो इसकी पुष्टि करती हों। जब एक मित्र दौड़ता हुआ भीतर चला आता है और पानी से भीगा हुआ है, तो मैं और भी अधिक आश्वस्त हो जाता हूँ कि वर्षा हो रही है। यदि मेरा मित्र अपना गीला छाता मुझे पकड़ाता है, तो मैं और भी ज्यादा आश्वस्त होता हूँ कि वर्षा हो रही है। और फिर यदि वह कहता है, "बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है," तो मैं यहाँ तक पूरी तरह से आश्वस्त हो जाऊँगा कि मैं अपने छाते के बिना बाहर जाने के बारे में सोचूँगा भी नहीं। ये अवलोकन दोहराए हुए नहीं हैं; मैं गड़गड़ाहट को सुनता हूँ; मैं मेरे अपने को भीगा हुआ देखता हूँ; मैं उसके छाते को छूता हूँ; और मैं एक स्पष्ट विवरण को प्राप्त करता हूँ। ये सब प्रमाण अलग-अलग बातें दर्शाते हैं, और एक साथ मिलकर वे एक ऐसे प्रमाण की रचना करते हैं जो मुझे आश्वस्त कर देते हैं कि मेरा संदेह सही था।

कई रूपों में, विधिवत धर्मविज्ञानी मिश्रित मिलान की समान पद्धति का अनुसरण करते हैं। वे ध्यान देते हैं कि एक अनुच्छेद में एक बात सिखाई गई है। तब वे ध्यान देते हैं कि अन्य संबंधित विषय का दावा किसी दूसरे अनुच्छेद में किया गया है। तब वे अन्य अनुच्छेदों को पाते हैं जो अन्य प्रासंगिक विचारों की शिक्षा देते हैं। तब वे इस सारी जानकारी को एकत्र करके इन सभी धर्मवैज्ञानिक तथ्यों से बने एक धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य की रचना करते हैं।

यह देखने के लिए कि यह प्रक्रिया कैसे कार्य करती है, आइए हम ब्रकोफ़ की पुस्तक सिस्टेमेटिक थियोलोजी के भाग 1 के अध्याय 8 में मसीह के परमेश्वरत्व पर उसकी चर्चा की ओर मुड़ें। हमने पहले ही यह देख लिया है कि उसने इस स्पष्ट दावों के दोहराव पर ध्यान दिया है कि मसीह ईश्वरीय है जब उसने यह कहा था कि बाइबल "स्पष्टता से पुत्र के परमेश्वरत्व की पुष्टि करती है।" परंतु उसके धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य कि मसीह पूरी तरह से ईश्वरीय है, को संबंधित परंतु भिन्न दावों के मिश्रित मिलान के द्वारा भी समर्थन मिलता है, जिसे उसने पवित्रशास्त्र के कई हिस्सों से खोजा था। उसने इस तरीके से कहना जारी रखा :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> **[बाइबल भी] उसके साथ ईश्वरीय नामों को जोड़ती है...उसमें ईश्वरीय गुणों को जोड़ती . . . उसके बारे में ऐसे बोलती है जो ईश्वरीय कार्य करता है . . . और उसे ईश्वरीय सम्मान देती है।**

ब्रकोफ़ का यह निष्कर्ष कि मसीह परमेश्वर है इनमें से किसी भी दावे पर अलग-अलग आधारित नहीं था, बल्कि इन सभी धर्मवैज्ञानिक दावों पर सामूहिक रूप से आधारित था।

यह समझना कठिन नहीं है कि ब्रकोफ़ ने ऐसा क्यों किया। मसीह के ईश्वरीय होने की धारणा को पवित्रशास्त्र के कई व्याख्याकारों के द्वारा चुनौती दी गई है। इसलिए, केवल यह दिखाना पर्याप्त नहीं था कि कुछ पद स्पष्ट रूप से उसके ईश्वरत्व की पुष्टि करते हैं। वह यह पुष्टि करना चाहता था कि उसने अन्य बातों के समर्थन को प्राप्त करके इन पदों को सही रूप से समझ लिया था। यह सच्चाई कि पवित्रशास्त्र मसीह के साथ ईश्वरीय नामों को जोड़ता है, और कि वे उसमें ईश्वरीय गुणों को जोड़ते है जैसे सर्वव्यापी, और सर्वज्ञानी, और कि वे उसके बारे में यह बोलते हैं कि वह परमेश्वर के समान कार्य करता है जैसे, सब वस्तुओं की रचना करना और संभालना; और कि वे उसे ऐसा सम्मान देते हैं जैसा केवल परमेश्वर को मिलता है, जैसे आराधना और प्रार्थना। ये बाइबल आधारित तथ्यात्मक दावे एक साथ मिलकर ऐसे मजबूत प्रमाण की रचना करते हैं कि ब्रकोफ़ के पास में एक सच्चा धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य था : यह तर्क-वाक्य कि मसीह ईश्वरीय है।

अतः इस तरह से विधिवत धर्मविज्ञानी सबसे पहले बाइबल के अनुच्छेदों में दर्शाए गए दावों पर अपना मुख्य ध्यान लगाने के द्वारा पवित्रशास्त्र से धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना करते हैं। और दूसरा पवित्रशास्त्र के भिन्न हिस्सों से मिलते-जुलते अनुच्छेदों को एकत्र करने के द्वारा। इन माध्यमों के द्वारा विधिवत धर्मविज्ञानी यह भरोसा रखने में सक्षम हो जाते हैं कि उन्होंने ऐसे धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना की है जो पवित्रशास्त्र के प्रति सच्चे हैं।

अब क्योंकि हमने धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के प्रति एक सामान्य दिशा निर्धारण को प्राप्त कर लिया है और हमने यह भी देख लिया है कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी इनकी रचना करते हैं, इसलिए हम अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : विधिवत धर्मविज्ञान में धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के मूल्य और खतरे।

मूल्य और खतरे

जब हम इस विषय का अध्ययन करते हैं, तो हम मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए तीन मुख्य स्रोतों पर होने वाले तर्क-वाक्यों के प्रभावों को देखने के द्वारा इस श्रृंखला के पिछले अध्यायों की पद्धति का ही अनुसरण करेंगे।

आपको याद होगा कि मसीहियों को परमेश्वर के सामान्य और विशेष प्रकाशन से ही धर्मविज्ञान का निर्माण करना होता है। हम प्राथमिक रूप से पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के द्वारा ही विशेष प्रकाशन की समझ को प्राप्त करते हैं, और हम समुदाय में सहभागिता, दूसरों विशेषकर मसीहियों से सीखने, और मसीही जीवन पर ध्यान केंद्रित करने; मसीह के लिए जीने के हमारे अनुभवों के द्वारा सामान्य प्रकाशन के महत्वपूर्ण आयामों को प्राप्त करते हैं।

क्योंकि ये स्रोत बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, इसलिए हम इनमें से प्रत्येक के प्रति धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के मूल्यों और खतरों की खोज करेंगे। हम सबसे पहले तर्क-वाक्यों और मसीही जीवन को देखेंगे; दूसरा हम समुदाय में सहभागिता के संबंध में तर्क-वाक्यों की खोज करेंगे; और तीसरा, हम पवित्रशास्त्र

की व्याख्या के संबंध में तर्क-वाक्यों की जाँच करेंगे। आइए सबसे पहले हम मसीही जीवन के धर्मवैज्ञानिक स्रोत को देखें।

मसीही जीवन

मसीही जीवन जीना व्यक्तिगत पवित्रीकरण की प्रक्रिया के अनुरूप होता है, और हमने अन्य अध्यायों में देखा है कि व्यक्तिगत पवित्रीकरण वैचारिक, व्यवहारिक और भावनात्मक स्तरों पर घटित होता है। या जैसा कि हमने लिखा है : सही विचार (ओर्थोडोक्सी), सही आचरण (ओर्थोप्राक्सिस) और करूणाभाव (ओर्थोपाथोस)।

समय हमें अनुमति नहीं देगा कि हम उन सभी तरीकों को देखें जिनमें धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य पवित्रीकरण के इन भिन्न-भिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं। इसलिए, हम स्वयं को उस एक मुख्य तरीके तक ही सीमित रखेंगे जिसमें वे मसीह जीवन में वृद्धि कर सकते हैं और एक मुख्य तरीके को जिसमें वे मसीही जीवन में रूकावट उत्पन्न कर सकते हैं। आइए, सर्वप्रथम हम उस एक तरीके को देखें जिसमें धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य मसीह के लिए जीवन जीने के हमारे प्रयासों में वृद्धि कर सकते हैं।

वृद्धि

पारंपरिक धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के बड़े लाभों में से एक यह है कि वे स्पष्ट और संक्षिप्त रूप में हमारे विश्वास के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को व्यक्त करते हैं। हमारे समय में, बहुत से मसीही स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से यह कहने में असमर्थ हैं कि वे किस बात पर विश्वास करते हैं। और क्योंकि हम अपनी मान्यताओं के ठोस सारांश नहीं बना सकते, इसलिए हमें अक्सर अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में मसीह के लिए जीने में कठिनाई होती है।

मुझे स्मरण है कि एक बार मैं एक युवती से बात कर रहा था जो नहीं जानती थी कि अपनी कलीसिया के बारे में क्या निर्णय ले। वह इस बात से बड़ी असहज थी कि उसकी कलीसिया अपने कुछ सदस्यों की अनैतिक जीवन शैली को सह रही थी, परंतु वह अपनी कलीसिया को छोड़ना नहीं चाहती थी। वह मेरे पास आई और कहा, “मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूँ। मैं प्रचार से इतनी आशीष प्राप्त करती हूँ कि मैं अपनी कलीसिया में जाना नहीं छोड़ना चाहती। मैं कैसे निर्णय लूँ?” तब, मैंने उससे पूछा, “आपके विचार से एक सच्ची कलीसिया के चिह्न क्या होने चाहिए?” उसने मुझे ऐसे देखा कि जैसे उसे कुछ भी पता नहीं और अंत में कहा, “मुझे नहीं पता।”

अतः मैं इस प्रकार आगे बढ़ा, “मैं नहीं सोचता कि तुम अपनी कलीसिया के बारे में तब तक कोई निर्णय ले सकोगी जब तक जब तक तुम यह नहीं समझ लेती कि एक सच्ची कलीसिया की क्या विशेषताएं होती हैं।” तब मैंने उससे कहा, “प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान सिखाता है कि एक सच्ची कलीसिया के तीन चिह्न होते हैं। वे हैं, वचन का विश्वासयोग्य रीति से प्रचार, मसीही संस्कारों का विश्वासयोग्य संचालन, और कलीसियाई अनुशासन का विश्वासयोग्यता से पालन।” उसकी प्रतिक्रिया उल्लेखनीय थी। उसने मुझसे कहा, “कितना अच्छा होता यदि किसी ने मुझे यह पहले बता दिया होता। मुझे पता ही नहीं था कि मैं इस बारे में क्या सोचूँ?”

आधुनिक संसार में मसीही अक्सर उन मूलभूत धर्मवैज्ञानिक दावों को सीखने के लिए भी समय निकालना नहीं चाहते जिनका दावा मसीहियत करती है। इसलिए वे सुगठित धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के स्थान पर भावनाओं या भ्रामक सुझावों को रख देते हैं। परंतु इनका परिणाम अक्सर एक जैसा ही होता है : जब हमें ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं, नैतिक चुनाव करने होते हैं जिनका सामना हम दिन प्रतिदिन करते हैं, तो हम नहीं जानते हैं कि क्या करें क्योंकि हम सुगठित धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना ही नहीं कर पाते। पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान ने हमें बहुत से तर्क-वाक्य दिए हैं जो पवित्रशास्त्र के प्रति

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सच्चे हैं। और उन्हें सीखना मसीहियों के लिए एक सबसे सहायक बात हो सकती हैं, जब वे मसीह के लिये जीवन जीने का प्रयास करते हैं।

अब पारंपरिक धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के साथ परिचित होना काफी सकारत्मक हो सकता है, परंतु इसी के साथ यह भी हो सकता है कि उन पर ज्यादा जोर देना या फिर उन पर बहुत अधिक निर्भर होना वास्तव में मसीही जीवन में रूकावट भी बन सकता है।

रूकावट

एक तरह से यह सच है कि वे मसीही जो विधिवत प्रक्रियाओं का अध्ययन करते हैं अक्सर यह सोचते हैं कि उनके मसीही जीवन में व्यावहारिक निर्णयों को लेने के लिए उन्हें केवल धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की व्यापक सूची की ही आवश्यकता है।

अब जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है, धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य बहुत अधिक सहायक हो सकते हैं। परंतु इसके साथ-साथ, हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि धर्मविज्ञान के मानक तर्क-वाक्यों और मसीही होने के नाते हमारे द्वारा किए गए चुनावों में अंतर होता है। धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य विशेषकर अमूर्त होते हैं या उन विषयों से अलग होते हैं, जिनका हम सामना करते हैं। इसलिए वे प्रत्यक्ष रूप से उन परिस्थितियों को संबोधित नहीं करते, जिनका हम सामना करते हैं। और इसके परिणामस्वरूप, वे उन व्यवहारिक निर्णयों के लिए पर्याप्त मार्गदर्शन प्रदान नहीं कर सकते, जिन्हें हमें लेना होता है।

दुर्भाग्य से, वे विश्वासी जो तर्क-वाक्यों पर बहुत ज्यादा निर्भर हो जाते हैं, अक्सर यह नहीं समझ पाते हैं कि फर्क कितना बड़ा है। वे स्वयं को दृढ़ता से समझाते हैं कि उन्हें केवल तार्किक रूप से तर्क-वाक्यों के बारे में सोचना है, और फिर सब कुछ बिलकुल अच्छे तरीके से हो जाएगा।

परंतु वास्तविकता में, मसीही होने के नाते हमारे हर निर्णय में हमें न केवल धर्मवैज्ञानिक विचारों पर निर्भर रहना चाहिए, बल्कि हमारी परिस्थिति के विवरणों और पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत सेवकाई जैसी बातों पर भी। हमें सामान्य प्रकाशनों के इन पहलुओं का प्रयोग उस अंतर को भरने के लिए करना चाहिए जो धर्मवैज्ञानिक सिद्धांतों और वास्तविक जीवन के निर्णयों के बीच पाया जाता है।

मैं फिर से उस युवती के उदाहरण की ओर मुड़ता हूँ जो अपनी कलीसिया को छोड़ने के बारे में सोच रही थी। जैसे ही उसने कलीसिया के तीन चिह्नों विश्वासयोग्य प्रचार, संस्कारों के विश्वासयोग्य संचालन और कलीसियाई अनुशासन के विश्वासयोग्य पालन के बारे में सुना, तो उसने एकदम अपनी कलीसिया को छोड़ने का निर्णय ले लिया। परंतु मैंने तुरंत उसे सावधान किया।

मैंने उसे चेताया, “एक मिनट ठहरो। तुम्हें कुछ महसूस करने की आवश्यकता है। इस संसार की किसी भी कलीसिया में सिद्धता के साथ ये तीनों चिह्न नहीं पाए जाते। तुम्हें अपनी कलीसिया की ओर ध्यान से देखने और यह निर्णय लेने की आवश्यकता है कि वहाँ पर बातें कितनी बुरी हैं। और इससे भी बढ़कर, तुम्हें पवित्र आत्मा की अगुवाई को खोजते हुए प्रार्थना में भी समय व्यतीत करने की आवश्यकता है, ताकि तुम एक दृढ़ निर्णय ले सको। केवल तब ही तुम एक अच्छे विवेक के साथ उसे छोड़ सकोगी।”

सारांश में, मैं उस युवती से कह रहा था कि उसकी परिस्थिति में धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य भले ही महत्वपूर्ण थे, परंतुकेवल धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों पर ही निर्भर होना वास्तव में उसके मसीही जीवन में रूकावट बन सकता था। इससे पहले कि वह कुछ करती, उसे सामान्य प्रकाशन की ओर देखने की आवश्यकता थी। उसे अपनी परिस्थिति को अच्छी तरह समझने, और पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत सेवकाई के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता थी।

इस समझ के साथ-साथ कि कैसे धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य मसीही जीवन में लाभ और हानियाँ दोनों ला सकते हैं, हमें इस बात के प्रति सतर्क रहना चाहिए कि वे समुदाय में हमारी सहभागिता को कैसे प्रभावित करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

समुदाय में सहभागिता

समुदाय में सहभागिता हमारे जीवनों में मसीह की देह के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करती है। इन अध्यायों में, हमने मसीही समुदाय के भीतर सहभागिता के तीन महत्वपूर्ण आयामों के बारे में बात की है : मसीही धरोहर — अतीत की कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य की गवाही; वर्तमान मसीही समुदाय — आज के मसीहियों में पवित्र आत्मा की गवाही; और व्यक्तिगत निर्णय — हमारे व्यक्तिगत निष्कर्षों और बोधों में पवित्र आत्मा के कार्य की गवाही। समुदाय के ये आयाम अनेक रूपों में परस्पर सहभागिता करते हैं।

हम संक्षेप में केवल कुछ उन विचारों का उल्लेख करेंगे जिनमें धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य सामुदायिक सहभागिता के इन तत्वों में या तो वृद्धि कर सकते हैं या फिर इनमें रूकावट बन सकते हैं। आइए पहले एक महत्वपूर्ण तरीके को देखें जिसमें धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि कर सकते हैं।

वृद्धि

यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि हमारे समय में बहुत से सुसमाचारिक मसीही एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में, एक प्रचारक या शिक्षक से दूसरे के पास, घूमते रहते हैं, उनमें थोड़ी सी भी योग्यता नहीं होती कि वे उन कलीसियाओं और प्रचारकों के साथ कैसे सहभागिता करें। हम नहीं जानते कि किसका अनुसरण करें। हम किसी कलीसिया की सकारात्मकता और नकारात्मकता को समझ नहीं सकते। समझ की यह कमी सामान्य रूप से मसीही विश्वास के मूलभूत तथ्यात्मक दावों की अज्ञानता के कारण उत्पन्न होती है। विधिवत धर्मविज्ञान के मूलभूत धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों से अवगत होना मसीह का और अधिक समझदार अनुयायी बनने का एक उत्तम तरीका है।

ठोस धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों का लाभ उठाने का एक बहुत ही व्यवहारिक तरीका कुछ प्रोटेस्टेंट धर्मशिक्षाओं की प्रश्नोत्तरी से परिचित होना है। धर्मशिक्षाओं की प्रश्नोत्तरी जैसे हैडलबर्ग धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी या वेस्टमिनस्टर लघु धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी छोटे धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य प्रदान करती हैं, जिन्हें सीखना आसान है। और इन धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए मसीह के अनुयायी और अधिक समझ प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि कोई जीवन के उद्देश्य या लक्ष्य पर चर्चा करना चाहता है, तो उसके लिए वेस्टमिनस्टर लघु धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी के पहले प्रश्न और इसके उत्तर को जानना बहुत सहायक होगा। सुनिए किस प्रकार यह एक सरल वाक्य में एक ठोस बाइबल आधारित शिक्षा का सारांश प्रस्तुत करता है। इस प्रश्न के उत्तर में :

> **मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?**

धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी उत्तर देती है :

> **मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और सदैव उसका आनंद लेना है।**

मान लें कि कोई एक नए दृष्टिकोण के साथ आता है कि मसीही अपने जीवन में राहत कैसे पा सकते हैं, तो हैडलबर्ग धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी के पहले प्रश्न और इसके उत्तर को जानना बहुत सहायक होगा। पहला प्रश्न यह है:

> **आपके जीवन और मृत्यु में एकमात्र राहत क्या है?**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी इसका उत्तर ऐसे देती है कि:

> यह कि मैं अपना नहीं हूँ, बल्कि जीवन और मृत्यु में शरीर और प्राण सहित मेरे विश्वासयोग्य उद्धारकर्ता यीशु मसीह का हूँ। उसने अपने बहुमूल्य लहू से मेरे सारे पापों की कीमत को चुका दिया है और मुझे शैतान के अत्याचार से छुड़ा दिया है। वह मेरी रक्षा इस प्रकार करता है कि स्वर्ग में मेरे पिता की इच्छा के बिना मेरा एक बाल भी नीचे नहीं गिर सकता : सच्चाई तो यह है कि सभी बातें मिलकर मेरे उद्धार के लिए कार्य करती हैं। क्योंकि मैं उसका हूँ, इसलिए मसीह अपने पवित्र आत्मा के द्वारा मुझे अनंत जीवन का आश्वासन देता है और मुझे अब से उसके लिए जीने में पूरे मन के साथ राजी और तैयार कराता है।

इस तरह के ठोस धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को सीखना हमें और अधिक समझदार बना सकता है जब हम अन्य मसीहियों के साथ सहभागिता करते हैं। और इस तरह से, वे समुदाय में हमारी सहभागिता में बहुत अधिक वृद्धि करते हैं।

इसके साथ-साथ, जहाँ ठोस धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य हमें और अधिक समझदार बनाने के द्वारा सहभागिता में वृद्धि कर सकते हैं, वहीं बाइबल आधारित तर्क-वाक्यों पर ध्यान केंद्रित करना मसीहियों के बीच सहभागिता में रूकावट भी बन सकता है।

रूकावट

कई बार मसीही बहुत घनिष्ठता के साथ स्वयं को तर्क-वाक्यों के एक समूह के साथ जोड़ लेते हैं कि उनको सकारात्मक तरीकों से ऐसे अन्य विश्वासियों के साथ सहभागिता करने में कठिनाई होती है जो ठीक उनके तरीके से बातों को न कहते हों।

देखिए, धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के साथ एक ऐसी समस्या है जिसे हम अक्सर भूल जाते हैं : उनमें से अधिकाँश बाइबल के उद्धरण नहीं हैं। इसकी अपेक्षा वे मानवीय व्याख्या के उत्पाद हैं। वे बाइबल आधारित शिक्षाओं को जितनी हो सके उतनी सटीकता से सारगर्भित करने का प्रयास करते हैं। परंतु जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा है, कई बार वे बहुत जटिल प्रक्रियाओं से निकलते हैं। यहाँ तक कि सर्वोत्तम धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों का कार्यक्षेत्र सीमित होता है। और सभी किसी न किसी रूप में त्रुटिपूर्ण होते हैं। परिणामस्वरूप, जब हम विधिवत धर्मविज्ञान में धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के बारे में और अधिक सीखते हैं, तो हमें उनके साथ अपना लगाव सदैव इस प्रकार रखना चाहिए कि वे प्रेरणा-प्राप्त नहीं हैं, वे त्रुटिरहित नहीं हैं, और उनका अधिकार उतना बड़ा नहीं है, जितना बाइबल का है।

मुझे याद है एक बार मैं एक मित्र से बातचीत कर रहा था जिसने मुझसे कहा कि उसका कोई मसीही मित्र नहीं था। उसने अकेले होने की शिकायत की। तो मैंने उससे पूछा कि क्या उसने किसी से संगति की थी। उसने मुझसे कहा, “मुझे ऐसा कोई मिलता ही नहीं जो उन बातों से सहमत हो जिन्हें मैं मानता हूँ। इसलिए मेरी किसी के साथ कोई संगति नहीं है।” मैंने इस तरह से प्रत्युत्तर दिया, “तुम्हारा अर्थ है कि तुम्हें ऐसा कोई नहीं मिलता जो मसीह पर विश्वास करता हो?” उसने उत्तर दिया, “अरे नहीं, ऐसा नहीं है, मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता जो सब बातों में मेरे साथ सहमत हो।” मुझे इस मित्र से बहुत निराशा हुई। उसे जानना चाहिए था कि मसीही लोग कभी भी धर्मविज्ञान के प्रत्येक विवरण पर कभी सहमत नहीं हुए हैं।

परंतु दुर्भाग्यवश, मेरे मित्र की भयानक प्राथमिकताएँ थीं। उसने धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों पर बहुत ज्यादा जोर दे दिया था, इतना कि इसने दूसरों के साथ संगति करने की अपनी योग्यता को ही बाधित कर दिया था। सदियों से, मसीह के कार्य में तब-तब बहुत हानि हुई है जब-जब मसीहियों ने अपनी धर्मवैज्ञानिक प्रतिबद्धताओं को रुकावट मानकर अन्य मसीहियों के साथ सहभागिता करने से इनकार

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

किया है। जब-जब हम इस बात पर जोर देते हैं कि दूसरे लोग धर्मवैज्ञानिक विषय के हमारे इस या उस पहलू से सहमत हों, तो हम पवित्रशास्त्र के निर्देशों से बहुत दूर चले जाते हैं।

इस संबंध में, 1 कुरिन्थियों 8:4-12 में प्रेरित पौलुस के शब्दों पर ध्यान दें। वहाँ हम अपनी धर्मवैज्ञानिक प्रतिबद्धताओं के बारे में इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> हम जानते हैं कि मूर्ति जगत में कोई वस्तु नहीं. . . पर सब को यह ज्ञान नहीं; परंतु कुछ तो अब तक मूर्ति को कुछ समझते हैं . . . उन का विवेक निर्बल होने के कारण अशुद्ध हो जाता है . . . यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूर्ति के मंदिर में भोजन करते देखे . . . तो क्या उसके विवेक में मूर्ति के साम्हने बलि की हुई वस्तु के खाने का साहस न हो जाएगा? . . . इस प्रकार भाइयों के विरूद्ध अपराध करने से . . . तुम मसीह के विरूद्ध अपराध करते हो (1 कुरिन्थियों 8:4-12)।

पौलुस ने ज्ञानवान मसीहियों को उत्साहित किया कि वे उनसे प्रेम करें जो उनके समान ज्ञानवान नहीं थे, और उनकी सेवा करें। उसने ज्ञानवानों को यहाँ तक उत्साहित किया कि वे दूसरों को ठोकर खिलाने से बचाने के लिए अपने ज्ञान को सीमित रूप से काम में लें। विभाजन और कुलीनवाद को उत्साहित करने की अपेक्षा, पौलुस ने जोर दिया कि वे जिनका धर्मविज्ञान अच्छा था, उन लोगों के साथ संगति करने के ऐसे तरीके ढूँढें जिनका धर्मविज्ञान ग़ैर-मूलभूत विषयों पर कमजोर था। संक्षेप में, उसने उन्हें सिखाया कि ग़ैर-मूलभूत धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की सटीकता की अपेक्षा संगति अधिक महत्वपूर्ण है। यह हम सबके लिए समय है कि हम यह सीखें कि ऐसे मसीहियों के साथ मिलकर कैसे कार्य किया जाए जो हर तरह के विवरण में हमारे साथ सहमत नहीं होते। ऐसे कुछ तरीकों को देखने के बाद जिनमें धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य मसीही जीवन और समुदाय में सहभागिता से संबंधित है, अब हमें अपने तीसरे मुख्य धर्मवैज्ञानिक स्रोत की ओर मुड़ना चाहिए : पवित्रशास्त्र की व्याख्या। विधिवत प्रक्रियाओं में तर्क-वाक्य बाइबल की हमारी व्याख्या को कैसे प्रभावित करते हैं?

पवित्रशास्त्र की व्याख्या

मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण में व्याख्या महत्वपूर्ण है क्योंकि यही पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन तक हमारी प्रत्यक्ष पहुँच है। हमने एक अन्य अध्याय में सुझाव दिया है कि पवित्र आत्मा द्वारा कलीसिया को पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में नेतृत्व प्रदान करने के तीन तरीकों के बारे में सोचना काफी सहायक होता है। हमने इन व्यापक श्रेणियों को यह कहा है : साहित्यिक विश्लेषण, ऐतिहासिक विश्लेषण और विषयात्मक विश्लेषण। साहित्यिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक चित्र के रूप में देखता है, मानवीय लेखकों द्वारा अपने विशिष्ट साहित्यिक गुणों के माध्यम से अपने मूल श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए एक कलात्मक प्रस्तुति के रूप में। ऐतिहासिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखता है, उन प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं को देखने और उनसे सीखने का तरीका है जिनका वर्णन बाइबल करती है। और विषयात्मक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक दर्पण के रूप में देखता है, हमारी रुचि के प्रश्नों और विषयों पर मनन करने के तरीके के रूप में।

व्याख्या की इन रूपरेखाओं को अपने मन में रखते हुए, हमें उन तरीकों को खोजना चाहिए जिनमें धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य बाइबल की हमारी व्याख्या में या तो वृद्धि कर सकते हैं या फिर रूकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

वृद्धि

तर्क-वाक्यों द्वारा व्याख्या में हमारी सहायता का एक सबसे स्पष्ट तरीका यह है जिसमें वे उन धर्मवैज्ञानिक दावों को स्पष्ट करते हैं जो पूरी बाइबल में बिखरे हुए हैं।

यदि कोई ऐसी बात है जो सत्य हो तो वह यह है : बाइबल एक जटिल पुस्तक है। इसकी विभिन्न साहित्यिक शैलियाँ, ऐतिहासिक उल्लेख और धर्मवैज्ञानिक शिक्षाएँ इतनी विस्तृत हैं कि बहुत से मसीही बाइबल में नियमितता को नहीं देख पाते हैं। इसके फलस्वरूप, हममें से बहुत से पवित्रशास्त्र के छोटे-छोटे भागों को खोजने और अध्ययन करने से संतुष्ट हो जाते हैं ताकि वे इस या उस अनुच्छेद से यहाँ वहाँ के कुछ सिद्धांत सीख लें। जब हम बाइबल के प्रति अपनी जागरूकता को विस्तृत करना आरंभ करते हैं, तो हम स्वयं को असमंजस में खोया पाते हैं।

इस असमंजस में हमारी सहायता के लिए सदियों से चली आ रही विश्वासयोग्य व्याख्या आती है जिसका प्रतिनिधित्व विधिवत धर्मविज्ञान के धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों के द्वारा किया जाता है। सदियों से विद्वान मसीहियों ने ऐसे धर्मवैज्ञानिक दावों को ढूँढने के लिए पवित्रशास्त्र को खोजा है जो वहाँ प्रकट होते हैं। और पवित्रशास्त्र की शिक्षा के उन सारांशों का ज्ञान हमारे लिए मार्गदर्शक चिह्न प्रदान कर सकता है, जब हम बाइबल की विभिन्न शैलियों में से होते हुए यात्रा करते हैं।

मैं अक्सर अपने विद्यार्थियों से कहता हूँ कि बाइबल के किसी भी अनुच्छेद की शिक्षा में प्रवेश करने का एक सबसे उत्तम तरीका ऐसे तरीकों को ढूंढना है जिनमें अनुच्छेद ऐसे महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक विषयों को स्पर्श करता है जो विधिवत धर्मविज्ञान में प्रकट होते हैं। अब, बाइबल के हर भाग में प्रत्येक धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य के बारे में कुछ न कुछ कहने को नहीं होगा, परंतु मूलभूत धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य को ध्यान में रखते हुए एक अनुच्छेद को पढना एक बाइबल आधारित अनुच्छेद के प्रति एक आरंभिक समझ प्राप्त करने के लिए हमारी सहायता करेगा।

उदाहरण के लिए, हम पूछ सकते हैं, “उत्पत्ति 1 परमेश्वर के बारे में क्या शिक्षा देती है जिस पर विधिवत धर्मविज्ञानी जोर देते हैं?” अन्य बातों के साथ-साथ, वह यह शिक्षा देती है कि परमेश्वर ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्ता है। और यह मनुष्यों के बारे में क्या कहती है जिस पर विधिवत धर्मविज्ञान में जोर दिया जाता है? वह यह शिक्षा देती है कि हम सृजे गए प्राणी हैं, कि हम परमेश्वर के स्वरूप हैं, और कि परमेश्वर ने हमें पृथ्वी पर अधिकार करने का आदेश दिया गया है। यह सीखना कि कैसे विशेष अनुच्छेद विधिवत धर्मविज्ञान के तथ्यात्मक दावों को स्पर्श करते हैं, व्याख्या की एक महानतम उपलब्धि है जो विधिवत प्रक्रियाएं हमें प्रदान करती हैं।

व्याख्या के लिए तर्क-वाक्य कितने भी बहुमूल्य क्यों न हों, फिर भी हमें उस सबसे महत्वपूर्ण तरीके से अवगत होना आवश्यक है जिसमें वे पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या में रूकावट बन सकते हैं।

रूकावट

हम पहले ही उन तरीकों के बारे में बात कर चुके हैं जिसमें विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र की व्याख्या तथ्यात्मक कटौती के माध्यम से करते हैं, कैसे वे बाइबल के अनुच्छेदों के स्पष्ट और अस्पष्ट तथ्यात्मक दावों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और पवित्रशास्त्र की जो अन्य बातें हमारे लिए हैं उन्हें हाशिए पर कर देते हैं।

परंतु सच्चाई तो यह है कि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया कि वह विभिन्न स्तरों पर हमें प्रभावित करे, और उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हमें इन सभी रूपों में उसके मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इसलिए जब हम आदतन केवल तथ्यात्मक दावों को ही रेखांकित करते हैं, तो हम स्वयं को कई और बातों से दूर कर लेते हैं जिन्हें परमेश्वर हमें पवित्रशास्त्र में प्रदान करता है।

हम उन विभिन्न प्रभावों के बारे में बात कर सकते हैं, जिन्हें कई भिन्न तरीकों से डालने के लिए पवित्रशास्त्र को रचा गया था। परंतु एक सहायक दृष्टिकोण बाइबल आधारित लेखनों के तीन ऐसे आयामों के बारे में बात करना है जो आपस में संबंधित हैं।

पहला, बाइबल के अनुच्छेदों में शिक्षाप्रद प्रभाव होते हैं। अर्थात् वे स्पष्ट और अस्पष्ट तथ्यों की जानकारी देते हैं जिन्हें हमें जानना चाहिए और उन पर विश्वास करना चाहिए। यही विधिवत धर्मविज्ञान की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सामर्थ है। इसका लक्ष्य इन तथ्यों को धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों में अलग करना और उनका मिलान करना है।

परंतु इसके साथ-साथ, बाइबल के अनुच्छेदों में निर्देशात्मक प्रभाव भी होते हैं। वे हमारे जीवनों के लिए स्पष्ट और अस्पष्ट नैतिक दिशा निर्देश प्रदान करते हैं। यह तब सबसे स्पष्ट होता है जब हम ऐसे अनुच्छेदों को देखते हैं जो आज्ञाओं के रूप में होते हैं। परंतु ऐसे अनुच्छेद भी जिनकी रचना मुख्य रूप से जानकारी प्रदान करने के लिए की गई है, वे भी नैतिक दायित्वों को दर्शाते हैं।

पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16-17 में इस बात को पूरी तरह से स्पष्ट किया है। एक बार फिर से वहां लिखे उसके शब्दों को सुनें :

> संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

पौलुस के अनुसार, बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद की रचना कुछ न कुछ निर्देशात्मक प्रभाव को छोड़ने के लिए की गई है।

तीसरा, बाइबल के अनुच्छेदों में भावानात्मक प्रभाव होते हैं। वे स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से पाठकों की भावनाओं को लक्ष्य बनाते हैं। पवित्रशास्त्र का यह कार्य सबसे ज्यादा स्पष्ट तब होता है जब हम सर्वाधिक भावनात्मक लेखनों जैसे भजन संहिता, या ऐसे अन्य अनुच्छेदों को पढ़ते हैं, जहाँ बाइबल के लेखकों ने भावनाओं पर जोर दिया है। परंतु बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद में हमें भावानात्मक रूप से स्पर्श करने की क्षमता है।

मत्ती 22:37-40 पर ध्यान दें, जहाँ यीशु ने पुराने नियम को इस प्रकार सारगर्भित किया :

> " 'तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।' बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है : 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं" (मत्ती 22:37-40)।

पवित्रशास्त्र में प्रेम एक बहुत ही अधिक भावनात्मक पहलू है। और यीशु के अनुसार यह हमारे विश्वास के लिए आधारभूत है। बाइबल के लेखक हमें सब तरह की पवित्र भावनाओं का अनुभव करने की बुलाहट देते हैं। वे हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम पाप और इसके परिणामों से घृणा करने के प्रति उत्साहित हों। वे हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम पवित्रशास्त्र के पृष्ठों पर जो भी देखते हैं उसकी प्रतिक्रिया में हम रोएँ और आनंद मनाएँ और सारी मानवीय संवेदनाओं का अनुभव करें।

पवित्रशास्त्र में अनेक शैलियों का होना ही वह कारण है कि हमें बाइबल में धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों को खोजने में स्वयं को सीमित नहीं करना चाहिए। हमारे तथ्यों को सही दिशा में रखना बहुत महत्वपूर्ण है। परंतु इसके साथ-साथ हमारे नैतिक मूल्यों और हमारी भावनाओं को भी सही दिशा में रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पवित्रशास्त्र की असीम गहराई प्रतीक्षा कर रही है कि सावधानीपूर्ण व्याख्या के द्वारा उसकी खोज की जाए। परंतु बाइबल की सावधानीपूर्ण व्याख्या इतनी विस्तृत होनी चाहिए कि वह उन सब बातों को प्रकट करे जो पवित्रशास्त्र हमें प्रदान करना चाहता है।

अतः बात यह है कि विधिवत प्रक्रियाओं में ये तर्क-वाक्य ही हैं जो हमें कई तरह के मूल्य और खतरे प्रदान करते हैं। ये मसीही जीवन, समुदाय में सहभागिता, और पवित्रशास्त्र की व्याख्या को कई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तरीकों से बढ़ा सकते हैं। परंतु साथ ही ये इन तीनों मुख्य धर्मवैज्ञानिक स्रोतों तक हमारी पहुँच में रूकावट भी बन सकते हैं।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने तर्क-वाक्यों और विधिवत प्रक्रियाओं की खोज की। और हम इस मूलभूत समझ पर पहुँच चुके हैं कि वे क्या हैं और क्यों महत्वपूर्ण हैं। हमने यह भी देखा है कि विधिवत धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों का निर्माण कैसे होता है। और हमने उनके द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले हुए कुछ मूल्यों और खतरों की भी खोज की है।

विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्यों की रचना अति आवश्यक है। हमें पता होना चाहिए हम मसीही विश्वास के तथ्यों को कैसे व्यक्त करें और कैसे उनका बचाव करें। इसी कारण सदियों से धर्मवैज्ञानिक तर्क-वाक्य विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहे हैं, और वे आज तक ठोस विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।